लूटो सरस कथा का स्वाद ।
पढ़ो प्रेम से पुण्य प्रसाद ॥

गौतम मुनि

॥ श्री सत्य भगवान् की जय ॥

❋ पुण्य–प्रसाद ❋

—: रचयिता :—

सरल स्वभावी शान्त मुद्रा परम तेजस्वी धर्म मूर्ति
श्री मज्जैना चार्य पूज्य श्री कपूर चन्द्र जी म०
की सम्प्रदाय के परम तपो मूर्ति ज्ञान तपस्वी
निर्भीक वक्ता प० कस्तूर चन्द्रजी म०
के सुशिष्य साहित्य रसिक
श्री ग्रामीश चन्द्र जी
"गौतम"

—:• प्रकाशक •:—

ला० जसवंतसिंह त्रिमेमचन्द्र भीखी निवासी
सट्टा बाजार भटिण्डा

विक्रमाब्द } २०१०

{ वीर सम्वत २४७६

❋ समर्पण ❋

प्रात: स्मरणीय, परम आदरणीय, ज्ञान तपस्वी,

मानवता के प्रतीक, निर्भीक वक्ता, सत्य के

पुजारी, कवि रत्न उपाध्याय

श्री श्री १००८ श्री अमृत चन्द्र

जी महाराज के पवित्र चरण

कमलों में सादर

समर्पित

※ आमुख ※
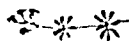
कविता, एक वह अलौकिक शक्ति है जिसके सुनने या पढ़ने के लिये आबाल वृद्ध नर नारी प्रत्येक समय लालयित रहते हैं। मनुष्य के हृदय पर कितने ही दुःख या शोक के बादल क्यों न छाये हों, यदि वह एक बार भी कविता माता की चरण शरण में आ जाता है तो उसकी सम्पूर्ण शोक चिन्ताएं असीम आनन्द के रूप में बदल जाती हैं। सच पूछो तो कविता वह जननी है जिसके गर्भ से लाखों और करोड़ों ही नहीं अपितु अनंतों काव्यों का जन्म हुआ है। साहित्यिक क्षेत्र में तो कविता का प्रमुख स्थान माना गया है। यद्यपि गद्य भी कोई कम महत्व की वस्तु नहीं है तथापि कविता को जो मान प्राप्त है वह गद्य को नहीं। गद्य और पद्य की होड़ कोई आज की नई होड़ नहीं है, यह तो अनादि काल से होती चली आरही है यह बात सर्वथा सन्देह रहित है। गद्य जिस काम को वर्षों में भी पूरा नहीं कर पाता पद्य उसी काम को क्षण के क्षण में पूरा कर देता है। इस बात की साक्षी के लिये एक नहीं अनेकों उदाहरण इतिहास के भण्डार में भरे पड़े हैं। गद्य का आनंद केवल एक व्यक्ति ही ले सकता है, परन्तु आप एक बार किसी पद्य को स्वर लय पूर्वक पढ़िए श्रोतागण एक दम लट्टू हो जायेंगे। पद्य की इस अभूत पूर्व विजय से उत्साहित होकर आधुनिक कवि गद्य कविताएं भी लिखने लग पड़े हैं। मानों गद्य स्वयं

उठाकर मुझे आगे के लिये उत्साहित करेंगे।

इस मेरे लघु काव्य का सन्शोधन करके, कवि रत्न उपाध्याय श्री अमृत चन्द्र जी महाराज ने जो मुझ पर असीम कृपा की है, इसके लिये मैं उनका अत्यन्त आभारी हूँ। सच पूछो तो इस पुस्तक निर्माण के मूल आधार श्री उपाध्याय जी महाराज ही हैं। मेरे इन निर्बल हाथों में इतनी शक्ति कहां थी जो मैं ऐसे ग्रन्थ का निर्माण कर पाता। यह उन्हीं की शुभ प्रेरणा तथा उन्हीं की कृपा दृष्टि का फल है, जो आज पाठक अपने हाथों में यह काव्य ग्रन्थ लिये हुये हैं।

पुस्तक की प्रेस कापी श्री हरिश्चन्द्र जी गुप्ता ने की है जिस के कारण ही पुस्तक बहुत शीघ्र प्रकाशित हो सकी है। हरिश्चन्द्र जी का यह कार्य अति प्रशंसनीय है।

भटिण्डा चातुर्मास
२१-११-५३

मुनि गौतम
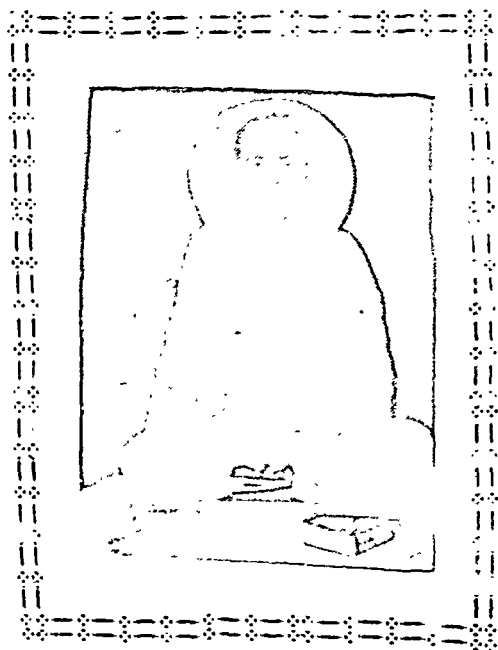
पुण्य प्रसाद के रचयिता—

श्री गौतम मुनि जी

॥ श्री सत्य भगवते नमः ॥

❋ पुण्य – प्रसाद ❋

–० मङ्गल – दोहा ०–

शुद्ध भाव से हृदय में, मंत्र धार नवकार।
पुण्य योग की शुभ कथा, सुनिए सब नर नार॥

॥ राधेश्याम ॥

इस भारत क्षेत्र में अति उत्तम "चम्पा नगरी" सुखदाई थी।
स्वर्गों से भी बढ़ कर शोभा जिस ने जगती में पाई थी॥
जग में प्रसिद्ध "प्रिय व्रत" राजा जहां अपना राज्य चलाते थे।
नय न्याय नीति से जनता का दुःख संकट सभी मिटाते थे॥

॥ दोहा ॥

नर नायक के गुणों से शोभित भूप महान्।
साम दाम सम्पन्न थे न्याय शील गुणवान्॥

॥ चौपाई ॥

"कमल प्रभा" राणी सुखकारी। चले भूप आज्ञा अनुसारी॥
दम्पति भोगें भोग रसीले। पुत्र विना दुःख मन को छीले॥

हृदय में अपने धैर्य धर नृप की जुदाई सहन कर।
राज्य की अब बाग डोरी अपने कर में ग्रहण कर॥
भाग्य रेखा है प्रबल कोई मिटा सकता नहीं।
आवागमन संसार से कोई बचा सकता नहीं॥
सामन्त के सुन कर वचन राणी कहे कैसे करूँ।
जीवन सहारा उठ गया किस का सहारा अब धरूँ॥
है तुझे अधिकार पूरा राज्य की इस डोर का।
पर ध्यान रखना नयन के तारे कुमर की ओर का॥
श्रवण कर राणी वचन रणवास से वह चल दिया।
पहुँच कर दरबार में सामान एकत्रित किया॥

॥ दोहा ॥

कुमर बनाया भूपति अति उत्सव के साथ।
मंत्री ने अधिकार सब ले लीने निज हाथ॥
"प्रिय व्रत" राजा का अनुज; वीर दमन बलवान।
अधिकारी मैं देश का; लीनी दिल में ठान॥

॥ राधेश्याम ॥

अब लगा सोचने वीर दमन अधिकार मुझे मिलना चाहिये।
भाई के बाद हक मेरा है सब को विचार करना चाहिये॥
लेकिन इस पापी मंत्री ने मम नाम मात्र भी नहीं लिया।
वे भान कुमर को सब ने मिल उद्धवता[१] से अभिषेक किया॥

१ उद्धवता—प्रसन्नता।

दुःख से जाती मार्ग में मिले सात सौ लोग।
सब के तन पर छा रहा महा कुष्ट का रोग ॥

॥ राधेश्याम ॥

राणी को जब देखा सब ने तो मिलकर उस से प्रश्न किया।
तू कौन ग्राम में रहे बहन किस कारण कानन मार्ग लिया ॥
राणी ने अपनी आदि अन्त सारी बातें बतलाई हैं।
कुष्टी बोले मत सोच करे हम तेरे सभी सहाई हैं ॥
दुःख से सुख से राणी वहां पर अपना कुछ समय बिताती है।
कालान्तर में अन्वेषण को रिपु सैना वहां पर आती है ॥
की कुष्टि जनों से पूछ ताछ कुछ भेद नहीं पर पाया है।
फिर कुष्टि जनों के मुखिया ने सुभटों को वचन सुनाया है ॥
यदि अपना भला मनाना है तो पास हमारे मत आना,
वरना कोढ़ी हो जाओगे मेरा तो केवल समझाना ॥
इस बात के सुनते सुभटों की सैना फौरन वापिस आई।
बोले सब जगल देख लिया पर नहीं कहीं राणी पाई ॥
अब खर पर हो असवार चली सब कुष्ट टोल संग में आया।
संगति से शिशु के कोढ़ हुआ यह देख हृदय अति घबराया ॥

॥ दोहा ॥

कर सुपुर्द सुत को उन्हें चली अगद[1] के काज।
सहन किये संकट सभी मन में सुख की दाज ॥

---

1 अगद—दवाई।

होने पर खतम पढ़ाई वे दोनों नृप के चरणों में आई।
सव अपनी कला दिखाई।
नृप के प्रसन्नता छाई॥
कहने से पितु माता के "सुर" ने खुद असुपति कीन।
"मैना" से फिर बोला राजा मांग तुझे वर दीन।
पितु यह क्या वात सुनाई,दोनों को,क्या आज्ञायह फर्माई।
नहीं धर्म रीति अपनाई॥

॥ दोहा ॥

उचित नहीं यह तात जी, करिये सोच विचार।
मात पिता ही सुता हित, चुनते हैं भरतार॥

॥ चौपाई ॥

मेरे सुख की वात विचारी।
दी आज्ञा मैंने सुख कारी॥
हाथ नहीं पुत्री कुछ तेरे।
सुख दुःख तेरा है वश मेरे॥

॥ दोहा ॥

हाथ जोड़ वोली सुता, वड़े प्रेम के साथ।
सुख दुःख मेरे भग्य का, नहीं किसी के हाथ॥

॥ चौबोला ॥

नहीं किसी के हाथ भाग्य का लिखा सामने आता।
उदय भाव के पुण्य पाप को कोई नहीं दवाता॥

गर्व करे यह मानव झूठा मैं सुख दुःख का दाता।
पाप पुण्य ही इस प्राणी का जग में खेल-खिलाता ॥

॥ दौड़ ॥

भूप सुन कोप भराया, भाग्य की देखूँ माया।
मारने हाथ उठाया
कन्या पर नहीं क्रोध कीजिये, मंत्री ने समझाया ॥

॥ दोहा ॥

तुम बुद्धि के सिन्धु हो, यह बालक नादान।
बराबरी मत कीजिये, हो इस में अपमान ॥
मंत्री ने हित भाव से, "मैना" को दे ज्ञान।
राज महल की ओर को, करा दिया प्रस्थान ॥

॥ राधेश्याम ॥

फिर कोप मिटाने राजा का मंत्री नृप को बन में लाया।
नगरी से दूर निकलने पर कुष्टों का झुंड नजर आया ॥
विस्मित हो राजा देख रहा यह टोल कहां से आया है।
सब पूछ ताछ करने पर फिर अपने मुंह से फरमाया है ॥
इन सबकेबीचयहलघुबालककिस भांति मनोहर शोभरहा।
शशि से भी सुन्दर है प्यारा सब के मन को लोभ रहा ॥
पर हाय कुष्ट ने इस के भी तन पर अपना डेरा लाया।
बस इसी भाव में अकस्मात् "मैना" का ध्यान उदय आया ॥

देखूँगा पुण्य सुता का अब सब तरह परीक्षा होवेगी।
कर दूँ विवाह इस कुष्टी से तो निज कर्मों को रोवेगी॥

—० हरि गीतिका ०—

सुन कर वचन भूपाल के मंत्रीश समझाने लगे।
नहीं क्रोध करना चाहिये सब बात बतलाने लगे॥

॥ राधेश्याम ॥

पोषक नहीं शोषक बनता है माता नहीं सुत को विष देती।
रक्षक भक्षक नहीं होता है नहीं बाड़ कभी खाती खेती॥
यह बच्ची है नादान अभी नहीं रोष तुम्हें करना चाहिये।
मैं बार बार समझाता हूँ इस ओर ध्यान धरना चाहिये॥
पर जैसे चिकने कलशे पर जल बिन्दु कभी नहीं टिकता है।
मीठा वह कभी न हो सकता जिस में कटुता की अधिकता है॥
बस इसी भांति नहीं लगी एक उल्टे पावों वापिस आया।
जल्दी से कुष्टी बालक को भृत्यों के द्वारा बुलवाया॥

॥ चौपाई ॥

कीनी नृप ने तुरत सगाई।
पुर जनता सुन कर दुःख पाई॥
"रूप सुन्दरी" अति घबराई।
पति चरणों में विनय सुनाई॥
कूप मांहि मत कन्या डालो।
बर सुन्दर सा देखो भालो॥

विविध भांति नृप को समझाया ।
तनिक दया नहीं मन में लाया ॥

॥ दोहा ॥

"श्री पाल" के साथ में किया भूप ने ब्याह ।
माता महलों में गई भरती ठण्डी आह ॥
मैंना को ले कर सभी आये विपिन मंझार ।
खुशी खुशी तब कन्यका करती प्रभु पुकार ॥

※ मैना की प्रभु प्रार्थना ※

(तर्ज—अय मेरे दिल कहीं दूर चल ....)

हे प्रभु अब तू ही साथ दे, कोई भी नहीं सगा अब रहा ।
तेरे चरणों में मन लग रहा ॥
घर बसा अब कहीं और पर, न ले जा स्वार्थ की ठौर पर।
न ले जा स्वार्थ की ठौर पर ॥
दिल में दुःख है यही इक बड़ा, पिता खुद ही प्रभु बन गया ।
पाप पुन बाकी कुछ न रहा ॥

॥ दोहा ॥

"मैना" से बोला कुमर सुनो प्रिये धर ध्यान ।
धिक् मेरे इस जन्म को जग में भार समान ॥

॥ राधेश्याम ॥

कंचन वर्णी तेरी काया सब विकल रूप हो जायेगी।
लज्जा को छोड़ जा मात पास वहां पर ही सुख तू पायेगी॥
सुन कर वाणी अपने पति की नयनों से अश्रु पात हुआ।
हे प्राणाधार! हे प्राण नाथ! मन में मेरे आघात हुआ॥
सागर मर्यादा तज सकता पश्चिम में भानु उदय होवे।
पर सती कदापि अन्य पुरुष को सुपने में भी न जोवे॥
पति देव सदा सानन्द रहें मेरा सुन्दर आचार यही।
दुःख सुख में पति के साथ रहे सतवन्ती का व्यवहार यही॥

॥ दोहा ॥

रहें प्रेम से दम्पति धर्म करें दिन रात।
नित्य नियम पालें सदा विधि से साय प्रात॥

* संगीत *

(तर्ज—जिन शासन नायक..............................)

यह पुण्य कहानी जग में सुखदानी है।
श्री पाल की॥
कई दिवस के बाद एक दिन मुनि कहीं से आया।
पति पत्नि फिर आये प्रेम से चरणों शीश झुकाया॥
"मैंना" से यों बोले मुनि जी कौन पुरुष यह बाई।
बीतक सारी बात सुनाई ऋषि बोले मुस्काई॥

रत्न मिला तुझ को हे पुत्री ! तेरा भाग्य सवाया
अल्प दिनों में "श्री पाल" यह वने वड़ा महाराया।
हाथ जोड़ "मैना" तव वोली दया सिन्धु भगवान
रोग निवारण हो किस विधि से करो प्रभो ! फरमान।

॥ दोहा ॥

धर्म ध्यान की दवा का जो जन करें प्रयोग।
पुत्री ! नव पद ध्यान से मिट जाते सव रोग॥

§ नवकार महिमा §

जपो रे भैया ! मंत्र श्री नवकार ॥ टेक ॥

नवकार जाप, हरता है पाप, सर्वज्ञ आप, मुख से कहते
नर्कों की मार, तिर्यंच भार, जग में अपार दुःख नहीं सहते।
इस के मंझार, ३६ हजार, सुर तावेदार, हर दम रहते
एकान्त रात, श्रद्धा के साथ, माला ले हाथ, दिन से गहते॥
जग में जो आज, विद्वत् समाज, मंत्राधिराज इस को माने।
सब से महान्, सव से प्रधान, गौतम के प्राण इस को जाने॥
जपे जो इस को पावे सुख भण्डार॥

॥ दोहा ॥

इस प्रकार नवकार की महिमा अपरम्पार।
जाप नियम आगे सुनो पावो सुख भण्डार॥

– वीर छन्द (आल्हा) –

विंशति माला नमस्कार की फेरो प्रति दिन ध्यान लगाय ।
रोग शोक सारा मिट जावे साफ साफ मैं कहूँ सुनाय ॥
ज्ञान दर्श चरित्र और तप पांच पदों में और मिलाय ।
ॐ ह्रीं श्रीं बीजाक्षर यह सब के आगे देओ लगाय ॥
क्वार सुदी सात्तम से ले कर पूनम तक नौं दिवस मंझार ।
करे तपस्या आयम्बिल की संकट मोचन सुख भंडार ॥
इसी तरह से चैत्र मास में आयम्बिल की ओली जान ।
वही पक्ष और वही तिथि है नमस्कार भी वही महान् ॥
श्री मुनिवर की वाणी "मैना" बड़े ध्यान से सुनती जाय ।
उसी समय इक श्रावक पुर से दर्शन हेतु पहुँचा आय ॥
यह साधर्मी दोनों अपने श्रावक से मुनि जी बतलाय ।
होवे जग में पूर्ण यशस्वी जो जन इन की करे सहाय ॥

॥ दोहा ॥

मुनि चरणों में स्नेह से नवां सेठ निज माथ ।
दम्पति को अति प्रेम से लाया अपने साथ ॥

॥ राधेश्याम ॥

प्रेम भाव और शुद्ध चाव से दोनों को घर में ठहराया ।
अब करें तपस्या शुद्ध भाव से दम्पति के मन में आया ॥
जो तिथि मुनि ने बतलाई आम्बिल दोनों ने धार लिया ।
एकाग्र चित्त से जाप जपें चंचल मन को भी मार लिया ॥

पहिले ही आम्बिल ने मिश्रो इक चमत्कार दिखलाया है।
सारा ही रोग समाप्त हुआ दिन दिन आरोग्य सवाया है।
बस उसी तरह से नवमें दिन हो गई परम सुन्दर काया
कंचन वर्णी सब देह वनी मानो कुछ पुण्य उदय आया ॥
जब नमस्कार का चमत्कार लोगों ने कानों सुन पाया।
यश फैल गया सारे पुर में "श्री पाल" सभी के मन भाया ॥
नव पद की महिमा जग छाई श्रद्धा बहु जन मन लाये है।
हैं धन्य धन्य मुनि तपो धनी जिस ने सब कष्ट मिटाये हैं ॥
फिर इसी विधि से"मैना"ने उन कुष्टि जनों का रोग हरा।
उपकार मान सब ने निज निज पुर नगरी को प्रस्थान करा ॥

॥ दोहा ॥

दम्पति रहते हैं वहां प्रेम सहित दिन रात।
पुत्र खोजती मार्ग में मिली एक दिन मात ॥

॥ चौबोला ॥

मिली एक दिन मात हृदय में स्नेह ज्वार उठ आया।
निकट कुमर माता के पहुँचे चरणीं शीश झुकाया ॥
धन्य दिवस यह धन्य घड़ी है मात दर्श में पाया।
पुत्र देख विस्मित हुई माता हृदय तुरत लगाया ॥

॥ दौड़ ॥

मिले जब सुत और माई, धार कुच पय की आई।

मात को झट घर लाया
सासू जान के "मैना" ने भी चरणों शीश झुकाया ॥

॥ दोहा ॥

हृदय लगा आशीश दे माता ने उस वार।
सुख से वेटी नित रहो वचन कहा सुख कार ॥

॥ चौवोला ॥

वचन कहा सुखकार पुत्र ने जननी को वतलाया।
मैना का उपकार सभी जो हुई निरोगी काया॥
महिला जग शृङ्गार शिरोमणि तैंने पुण्य कमाया।
तेरे ही कारण से वेटी आज पुत्र मैं पाया॥

॥ दौड़ ॥

पुनः मुनि दर्शन पाने चले तीनों ही स्याने।
सूचना मुनि की पाई
जंगम तीरथ जान रूप देवी भी चल कर आई॥

॥ दोहा ॥

देख सुता वैठी वहां विस्मित हुई अपार।
कुष्टी से शादी करी हुई स्वस्थ के लार॥
"रूप सुन्दरी" उस समय करती रुदन अपार।
कुल में दाग लगा दिया छोड़ा शुभ आचार॥

॥ राधेश्याम ॥

जब "मैना" ने देखी माता चरणों में शीश झुकाया है।
हे माता क्यों आनन्द निलय नयनों से नीर वहाया है॥
मत शंका कर अपने मन में यह वही मेरे प्राणेश्वर हैं।
"श्री कमला"मेरी सासु सुभग जिस कुक्षि के बालेश्वर हैं॥
वृत्तान्त श्रवण कर"मैना"से मन फूला नहीं समाया है।
मुनि चरणों में चारों ने ही हर्षित हो शीश झुकाया है॥
अब "रूप सन्दरी" तीनों को निज महलों में ले आई है।
"कमला"बोलीनिजसमधिनसे "मैना" कीअतिपुन्याईहै॥
इस के कारण दुःख दूर हुआ निज सुत के दर्शन कर पाई।
सुन"रूप सुन्दरी"बोल उठी दामाद मिला है सुखदाई॥
कुछ अपना परिचय बतलाओ सुनने की है इच्छा भारी।
तब"श्री पाल"की माता ने निज व्यथा सुनाई है सारी॥

॥ दोहा ॥

सुन कर परम प्रसन्न हो धर ईश्वर का ध्यान।
निवृत हो बन खेल से आये नृप स्वस्थान॥
"रूप सन्दरी"ने कहा आदि अन्त वृत्तान्त।
पुन्य पाल नृप श्रवण कर हुए मुदित अति शान्त॥

॥ राधेश्याम ॥

बस उसी समय नृप महलों से"मैना"समीप झट चल आया
अपराध हुआ मुझ से पुत्री ऐसा कह शीघ्र हृदय लाया।

अभिमान मेरा अब दूर हुआ मैं सत्य धर्म को जान लिया।
कर्मानुसार सुख दुःख मिलते यह मान लिया पहचान लिया ॥
अब जय जय कार हुई सारे नगरी भी अधिक सजाई है।
नगरी वासी सब लोगों ने नृप को दी अधिक वधाई है ॥
तब खुशी खुशी उस पुर में ही अपना शुभ समय बिताते हैं।
कानन क्रीड़ा के लिये एक दिन "श्री पाल" वन जाते हैं ॥

॥ दोहा ॥

रक्षा के हित साथ में आई सैन्य महान्।
कुमर सभी के बीच में लगता सिंह समान ॥

॥ चौक ॥

आंखें विशाल छाती चौड़ी चेहरे का रूप निराला है।
दांतों की सुन्दर लड़ी बंधी तन ने विस्मित कर डाला है ॥
काया का बल भी पूरा ही मानिन्द पिता के पाया है।
वह कोटि भट कहलाता था यह कोटि भट कहलाया है ॥
वाणी बोले ज्यों पुष्प झरें सागर के सम गंभीर बड़े।
धरती के सम हैं धीर बड़े वर योधा सच्चे वीर बड़े ॥
नगरी की एक सुकन्या ने जब दर्श कुमर का पाया है।
निज माता जी को हर्षित हो यों मन का प्रश्न सुनाया है ॥

॥ दोहा ॥

माता जी यह कौन है सचमुच देव कुमार।
काम देव के रूप में मानो कृष्ण मुरार ॥

मात सुता का प्रश्न सुन बोली बचन उचार ।
नृप का यह दामाद है सुकृत का भण्डार ॥

—० हरि गीतिका ०—

"श्री पाल" के कानों ने जब ऐसे बचन सुन पाये हैं ।
बोले मेरा जीवन है धिक् पितु मात गुप्त रखाये हैं ॥
उत्तम स्वगुण से जगत में मध्यम पिता के नाम से ।
होता वही जग में अधम पुजता जो मातुल नाम से ॥
महा नीच उस को समझना जो श्वसुर से सुप्रसिद्ध है ।
जीवन भी उस का व्यर्थ है और काम भी ना सिद्ध है ॥
वापिस वहीं से हो लिये दिल में अधिक है दुःख भरा ।
भूपाल सुस्ती देख कर "श्री पाल" से यों उच्चरा ॥
लोपी किसी ने आन तेरी या किसी ने दुःख दिया ।
चंपा पुरी का राज्य लेने को तेरा करता जिया ॥

॥ दोहा ॥

जो भी कुछ हो वार्ता झट पट करो बयान ।
वीर दमन यदि जीतना शीघ्र करो प्रस्थान ॥

॥ राधेश्याम ॥

जो औरों के बल पर लड़ता है वह जग में निबल कहाता है ।
है सबल वही जो निज बल से रिपुओं को मज़ा चखाता है ॥
इस कारण अब परदेश गमन कर भुज बल स्वयं बनाऊँगा ।
आज्ञा मुझ को जल्दी दीजे माता समीप अब जाऊँगा ॥

नृप पुण्य पाल की आज्ञा ले माता को बात बताई है।
मैं भी तेरे ही साथ चलूं मेरा तू एक सहाई है॥
मैं साथ तुम्हें लो माता निज कुछ काम न करने पाऊँगा।
"मैना" को प्रेम सहित रखना मैं शीघ्र तुम्हें ले जाऊँगा॥
माता बोली सुख से रहना नव पद का ध्यान सदा धरना।
अपने भुज बल के द्वारा ही शत्रु को अपने वश करना॥
परदेशों में सुख पा कर के मत जननी को विस्मृत करना।
अब खुशी खुशी जावो बेटा "मैना" के दिल धीरज धरना॥

॥ दोहा ॥

आज्ञा ले कर मात की आये "मैना" पास।
परदेशों में गमन की बात बताई खास॥

॥ राधेश्याम ॥

जब सुनी पति के मुख ऐसी "मैना" ने विनय सुनाई है।
किस कारण से प्रभु गमन करो मन में क्या आज समाई है॥
हे प्रिये सभी दुनिया मुझ को नृप का दामाद बताती है।
छिप गया पिता का नाम यही बस बात मुझे कलपाती है॥
हे प्राण नाथ यह सांच कही नहीं अधिक वास करना चाहिये।
पर पीछे से मेरा क्या हो इस का सुध्यान धरना चाहिये॥
वनवास गये श्री राम चन्द्र सीता भी उन के साथ रही।
सुख में दुःख में पति साथ रहे नारी का उत्तम धर्म यही॥
इसलिये विनय से कहती हूँ क्षण मात्र अलग नहीं रह सकती।
यदि हठकर तजकर जाओगे तो यह विपदा नहीं सह सकती॥

॥ दोहा ॥

हठ नहीं करना चाहिये सुनो प्रिये ! धर ध्यान ।
सासु चरण सेवा करो यही धर्म गुण खान ।

॥ राधेश्याम ॥

यह बात सत्य तू कहती है सीता श्री राम के साथ रही ।
पर यह तूने नहीं सोचा है कितनी विपदा बन बीच सही ॥
परदेशों में देखो "मैना" दुःख संकट बहुत सताते हैं ।
घर में ही रह कर धर्म करो हम बार बार समझाते हैं ॥

॥ दोहा ॥

पति की वाणी श्रवण कर, वो री "मैना" नार ।
हे भगवन् कृपया कहो, कब होंगे दीदार ॥

—० हरि गीतिका ०—

बारह बरस तिथि अष्टमी के दिवस हम यहां आयेंगे ।
आज्ञा हमें अब शीघ्र दो जल्दी यहां से जायेंगे ॥
ध्रुव वचन मेरा समझना यह टल नहीं सकता कभी ।
मान कर मन के बिना "मैना" वचन बोले तभी ॥
सब सचित वस्तु त्यागती और शयन पृथ्वी पर करूँ ।
त्याग कर सब वेश भूषा ध्यान नव पद का धरूँ ॥
दर्श जिस दिन आप का हो शुभ घड़ी होगी वही ।
भूल मत जाना मुझे बस प्रार्थना मेरी यही ॥
ध्यान धरना नव पदों का त्यागना पर नार को ।
सन्मार्ग पर चलना सदा शुभ शुद्ध रख व्यवहार को ॥

॥ दोहा ॥

"मैना" के सुन कर वचन कहने लगे कुमार।
नियत समय पर आऊँगा मत कर सोच विचार॥
ऐसा कह "श्री पाल" जी उठा डाल तलवार।
एकाकी झट चल दिये सिमर मंत्र नवकार॥

॥ चौवोला ॥

सिमर मंत्र नवकार लांघने नगर गिरि कई आये।
घने विपिन में जा कर देखा ध्यानी ध्यान लगाये॥
कर ना चाहे विद्या साधन किन्तु नहीं कर पाये।
देख कुमर से कहे करावो कुमर सिद्ध करवाये॥

॥ दौड़ ॥

विद्या धर हर्षाया, कुमर का मान बढ़ाया।
दी विद्या जल तरणी
तथा दूसरी विद्या दीनी रिपु शस्त्र को हरणी॥

॥ दोहा ॥

विद्या ले "श्री पाल" जी हुये प्रसन्न महान।
विद्या धर के साथ फिर किया तुरत प्रस्थान॥

॥ राधेश्याम ॥

जाते जाते सन्मुख देखा इक मानव स्वर्ण बनाता है।
कर रहा यत्न बहुतेरा ही पर हाथ नहीं कुछ आता है॥

"श्री पाल" पास में पहुँचे तो उस नर ने विनय सुनाई है।
कुछ बनो सहायक मेरे भी यह कर्म बड़ा सुखदाई है॥
"श्री पाल" कहें कर यत्न वही जो पहले हैं कई बार किया।
बनगयास्वर्णपलकेपलमें जब विधिवत् सब उपचार किया॥

॥ दोहा ॥

हो प्रसन्न उस व्यक्ति ने दिया स्वर्ण उपहार।
धन्यवाद दे कर कुमर आगे चले विचार॥

॥ राधेश्याम ॥

रूप नगर में आ कर के कुछ स्वर्ण बेच धन पाया है।
बहु वस्त्रादिक बनवा करके निज तन को खूब सजाया है॥
सब अस्त्र शस्त्र धारण करके नगरी में कदम बढ़ाया है।
चहुँ ओर घूम निर्भयता से मन में आनन्द मनाया है॥
इस भांति भ्रमण करते करते मध्यान्ह काल हो आया है।
बाहिर उपवन के वृक्ष तले जा कर के डेरा लाया है॥
श्रम के कारण निद्रा आई कुछ मन्द वायु उभराई है।
स्वप्नों की दुनियां जाग उठी चहुँ ओर शांति सी छाई है॥

॥ दोहा ॥

इधर वृक्ष की छांह में सोये हैं "श्री पाल"।
कौसम्बी पुर में उधर रथवाहन भूपाल॥
धवल सेठ रहता वहां पूरा साहूकार।
माल लाद जलयान में चला करन व्यापार॥

— पौराणिक छन्द —

लिया साथ में सेठ सामान पूरा।
न द्वादश वर्ष तक रहे जो अधूरा ॥
महाजन पुरुष भी बहुत साथ में हैं।
हजारों बहादुर सभी हाथ में हैं ॥

॥ दोहा ॥

लंगर छोड़ा यान का हो कर प्रमुदित गात।
पुर पाटन को लांघते चलते हैं दिन रात ॥
रूप नगर की खाई में आ कर अटका यान।
युक्ति विप्र मे पूछता सेठ महा मति मान ॥
कहे विप्र सुन सेठ जी अगर चलाना यान।
शुभ लक्षण से युक्त नर करो यहां बलिदान ॥

॥ राधेश्याम ॥

द्विज के सुन कर के वचन धवल मन में यों निश्चय करता है।
भूपति को भेंट चढ़ाने से मिल सकती मुझे सफलता है ॥
यों सोच थाल में रत्न भरे फिर राज सभा में आया है।
रख भेट चरण में भूपति को सादर निज शीश झुकाया है ॥
अति नम्र भाव से राजा को सारा वृत्तान्त सुनाया है।
बलि हेतु मुझे नर एक मिले सब यान विषय समझाया है ॥

राजा ने हर्षित हो कर के मंत्री जी को फर्माया है
शुभ लक्षण नर कोई ला कर दो ऐसा आदेश सुनाया है।
अभियोग न हो जिस पर कोई नहीं जिसका कोई साथी हो।
सम्वंधी सगा न कोई हो असहाय परन्तु अनाथी हो ॥

॥ दोहा ॥

मंत्री जी ने तुरत ही नृप आज्ञा अनुसार।
भेज दिये बहु सुभट जन हर फन में हुश्यार ॥
खोज खोजते घूमते नृप के सारे दास।
कर्म योग से आ गये "श्री पाल" के पास ॥

॥ राधेश्याम ॥

सोया जबदेखा "श्री पाल" सब मिल निश्चय यह कर पाये।
इच्छानुसार मिल गया पुरुष पर कैसे यह पकड़ा जाये ॥
है पुण्यवान बलवान बड़ा कैसे इस को जकड़ा जाये।
सुभटों का शोरो गुल सुन कर झट "श्री पाल" जी जग आये ॥
हथियार बंद सैनिक सारे "श्री पाल" कुमर से विनय करें
अकृत्य यहां बन गया एक श्री मान् ज़रा सा ध्यान धरें ॥
क्या बात बनी "श्री पाल" कहे सब साफ साफ बतला दीजे।
मत डरो ज़रा मत भय खाओ सब साफ साफ जतला दीजे
मीठी वाणी सुन कर ऐसी तब सुभट सभी बतलाते हैं
उस धवल सेठ की यान वार्ता आदि अन्त जतलाते हैं।

बलि आदि वार्ता सुन कर के "श्री पाल" कहे मन धैर्य्य धरो ।
मरने का भय नहीं मुझ को है कर्तव्य सभी निज पूर्ण करो ॥
क्या लिखा भाग्य में अजमाऊँ सब धवल सेठ का कष्ट हरूँ ।
ले चलो साथ में तुम अपने नृप आज्ञा को भी पूर्ण करूँ ॥

॥ दोहा ॥

ऐसा कह सुभटों सहित आये नृप दरबार ।
देख धवल इच्छित पुरुष हर्षित हुआ अपार ॥

॥ चौबोला ॥

हर्षित हुआ अपार सेठ झट कुमर यान में लाया ।
न्हला धुला कर गहनों से तन पूरी तरह सजाया ॥
चन्दन तिलक लगा कर झट पट वेदी पर बैठाया ।
"श्री पाल ने तुरत सेठ को ऐसे बचन सुनाया ॥

॥ दौड़ ॥

यान हो सिर्फ चलाना, मारना या दिल ठाना ।
सेठ ने वचन उचारा
यान चलाना ही केवल है बस उद्देश्य हमारा ॥

॥ दोहा ॥

निज सुख कारण मूढ़ तू हरण करे पर प्राण ।
हिंसक द्विज के वचन से हो न सकेगा त्राण ॥

॥ वीर छन्द ॥

सुन कर वाणी "श्री पाल" की धवल सेठ अति कोप भराय ।
कल का बालक शिक्षा देवे देखो कैसे मुँह पुलकाय ॥

सैना का जो सैन्यपति है उस को फौरन लिया बुलाय
सावधान रहना बालक से देखो कहीं भाग न जाय।
ब्राह्मण को यह हुकम सुनाया जल्दी इस को बलि चढ़ाय
सुन कर के यह बचन सेठ का कुमर क्रोध से अति थर्राय।
किस की मां ने दूध पिया है आ कर देवे हाथ लगाय
सैन्यपति की आज्ञा से फिर सब सुभटों ने घेरा लाय।
भूखे सिह समान कुमर तब झट पट सब पर झपटा आय
फिर क्या था बस हुई दना दन वायु तृणवत् सभी उड़ाय।
जो कोई भी आगे आवे सीधा ही यम लोक सिधाय
एक बार कर में जो आवे वापिस जाने ना वो पाय।
रुण्ड मुण्ड कर दिये अनेकों देख सेठ मन में घबराय
शूर वीर यह है तेजस्वी हाथ जोड़ कर विनय सुनाय।
हे भगवन् अब क्षमा करो तुम तेरी शक्ति सही न जाय।
आगे ऐसा नहीं करूँगा कहता मैं शीश झुकाय॥

॥ दोहा ॥

विनय सुनी "श्री पाल" ने बोला खोल ज़बान।
अन्यायी महा पातकी लेता पर की जान॥
पहुँचाऊँ यम लोक में तभी हृदय हो शान्त।
देख सेठ चरणों गिरा बोला हो कर क्लान्त॥

* मनुष्यजमारो *

ोध दूर कर शान्ति करो तुम करुणा के भण्डारी हो ।
मा करो अब के बस मुझ को क्षमा शील तुम भारी हो ॥
ठ वचन सुन राज कुमर का मानस कुछ कुछ शान्त हुआ ।
ोला बैठो सभी यान पर सब का मन निर्भ्रान्त हुआ ॥
ुमर वचन सुन बैठे सब जन प्रभु का मन में ध्यान किया ।
ल तरणी से राज कुमर ने चलता झट पट यान किया ॥
य जय कार हुई पुर भर में विस्मित सब नर नार हुए ।
ठ साथ सारे ही यात्री तन मन से बलिहार हुए ॥

॥ दोहा ॥

सेठ हृदय में सोचता पुण्यवान् यह जीव ।
आगे चल कर यह मुझे देगा काम अतीव ॥

॥ चौबोला ॥

देगा काम अतीव कुमर को दे शिक्षा समझावे ।
साथ चलो जैसे हो मेरे कर कर विनय सुनावे ॥
कुमर कहे यदि क्रोड़ सुनैय्या वार्षिक देना भावे ।
साथ चलूं मैं तभी सेठ जी निर्णय साफ सुनावे ॥

॥ दौड़ ॥

रकम मांगी है भारी, सेठ ने की इन्कारी ।
कुमर जी तत्क्षण बोले

सेवक बन कर नहीं चलूँ मैं भाव हृदय के खोले ॥

॥ दोहा ॥

दश हजार है सुभट जन सब विधि से बलवान् ।
सेवा में रहते सदा मेरी श्रय मति मान् ॥
अनुनय से इस भांति जब समझाया बहुबार ।
भ्रमण हेतु सादर चलूँ बोले कुमर विचार ॥
कर निर्णय दोनों चले हो कर यान सवार ।
बैठे कुमर गवाक्ष में देखें उदधि बहार ॥
चलते चलते आ गये बबर कोट के पास ।
वाहक ने तब सेठ से कही बात इक खास ॥

॥ राधेश्याम ॥

कोयला पानी सब खतम हुआ अब जहाज नहीं आगे जाता ।
इस पुर में ही अब लंगर दो बस यही मेरे मन में भाता ॥
तब धवल सेठ की आज्ञा से उस पुर में ही लंगर लाया ।
जल धारा का कर लेने को नृप का अनुचर चल कर आया ॥

॥ दोहा ॥

गर्वित हो कर सेठ ने दिया नहीं जल दान ।
बातों बातों में बढ़ी अतिशय खींचा तान ॥

॥ चौबोला ॥

अतिशय खींचा तान जोर जब ज़रा नहीं चल पाया ।
अनुचर आया भूप चरण में सारा हाल सुनाया ॥

सुन कर सारा हाल ववर के क्रोध वदन में छाया ।
दल वल सैना ले कर भूपति स्वयं आप चढ़ धाया ॥

॥ दौड़ ॥

तेज नृप सहा न जावे वणिक सैना भग जावे ।
द्रविण पर पहरा दीना
वांध सेठ को भूपति ने फिर महलों का रुख लीना ॥

॥ दोहा ॥

वंधा देख कर सेठ को यों वोले "श्री पाल" ।
सैना तेरी किधर है हुआ भला क्या हाल ॥

॥ राधेश्याम ॥

यदि कोड़ सुनैय्या पहिले ही स्वीकार मेरा तू कर लेता ।
तो इसी समय सारा संकट मैं क्षण के क्षण में हर लेता ॥
तब धवल कहे अय कुमर भला क्यों मुझको अधिक सताता है ।
ज़ख्मों पर मेरे नमक छिड़क क्यों दुःख पर दुःख अवढाता है ॥
यदि ववर भूप से धन मेरा और मुझ को मुक्त करायेगा ।
आधे धन का स्वामी होगा यह वचन न टलने पायेगा ॥
यों धवल सेठ की सुन वाणी झट धनुष वाण कर में धारा ।
जा कर फिर राज भवन में वह ऊँचे स्वर से यों ललकारा ॥
हे भूप होश कर सम्भल ज़रा अव तेरी शामत आई है ।
जो थोड़े से कर के कारण यह इतनी वात वढ़ाई है ॥

"श्री पाल"कुमर के वचनों से नृप अधिक जोश में आया है।
बोला असमय में अरे बता क्यों काल गाल में आया है ॥

॥ दोहा ॥

रिश्तेदारी धवल से क्या तेरी सुख माल ।
वाल काल में व्यर्थ तू बुला न अपना काल ॥

॥ राधेश्याम ॥

नृप की वाणी सुन राज कुमर यों समुचित उत्तर देते हैं
मानो अपनी जीवन नैया अपने बल पर ही खेते हैं ॥
बोले यों बातें बना बना क्या क्षत्रिय पन दिखलाता है।
यदि शक्ति है तो रण में आ क्यों फोकट गाल बजाता है ॥
रिश्तेदारी अपनी राजन् ! युद्धस्थल में बतलाऊँगा।
जब मिलें वीर से वीर आन परिचय तब ही जतलाऊँगा ॥
यह सुन कर जोश भरी बाणी भूपति के तन में आग लगी।
बस फिरक्या था बिजली जैसी चहुँ ओर युद्ध की आग जगी ॥
तब स्वयं भूप ने क्रोधित हो घन बन करके सर बरसाये।
पर कुमर खड़ा ज्यों का त्यों ही कुछ बाल न बांका कर पाये ॥
भूपति थक कर जब चूर हुआ तव कुमर वचन फर्माता है।
कर लिया वार तुम ने पहिले अब वार हमारा आता है ॥
इतना कह करके "श्री पाल" तीरों की झड़ी लगाता है।
भुज बल के द्वारा क्षण भर में वह सैना सभी भगाता है ॥

फिर बांध जूड़ कर भूपति को झट धवल सेठ पै लाया है।
कर बंधन से उन्मुक्त सेठ को तुरत स्वतन्त्र वनाया है॥
नृप को बंदी लख सेठ धवल मूछों पर ताव जमाता है।
बदला लेने के लिये शीघ्र कर में तलवार उठाता है॥

॥ दोहा ॥

धरणी पति को मारने चला सेठ जिस वार।
हाथ पकड़ "श्री पाल" ने कहे वचन हितकार॥
देखी तेरी वीरता म्यान करो तलवार।
नीति बताती है सदा नव पर करो न वार॥

॥ राधेश्याम॥

पहिला अवध्य महमान कहा, दूजा जो चरण शरण आया।
तीजा रोगी चौथा अवध्य, जो बंधन द्वारा बंध पाया॥
पंचम जो पीठ दिखा भागे, और वृद्ध गुरु वालक नारी।
इन नव पर हाथ उठाने में समझो अपराध बड़ा भारी॥
जब देखा कुमर नरम नृप ने श्रद्धा से वचन सुनाया है।
अब क्षमा करो अपराध मेरा यों कह कर शीश झुकाया है॥

॥ दोहा ॥

सभी भांति अनभिज्ञ था मैं तुम से श्री मान्।
रहिये प्रेम प्रभाव से निर्भय सिंह समान॥

॥ चौपाई ॥

निर्बन्धन तब भूपति कीना।
राज कुमर बहु आदर लीना।

जो जो सुभट समर से भागे।
क्रोध वशात् सेठ ने त्यागे॥
रखे कुमर ने करुणा कीनी।
शत शत मोहरें सब को दीनी॥
अर्ध यान स्वकर में लीना।
सुभटों का फिर पहरा दीना॥
दो सौ पच्चीस यान सम्भाले।
बने आप सब के रखवाले॥
नृप के भागे सुभट बुलाए।
निज निज पद पर सभी रखाए॥

॥ दोहा ॥

तेज देख "श्री पाल" का यों बोले भूपाल।
विनयश्रवणकरघरचलो सब संकोच निकाल॥

॥ चौपाई ॥

धवल कहे सुन प्रभु "श्री पाला"।
रतन द्वीप है दूर विशाला॥
तुम गुणवंत जगत के राजा।
चाह करे तव सकल समाजा॥
मार्ग कठिन है दुर्गम भारी।
शीघ्र चलो है राय हमारी॥

॥ दोहा ॥

वाणी सुन कर सेठ की बोला कुमर विचार ।
पिता तुल्य नृप वचन हैं रहें दिवस दो चार ॥
समझा कर यों सेठ को कुमर महा गुणखान ।
ववर भूप के साथ में आये आज्ञा मान ॥

॥ चौबोला ॥

आये आज्ञा मान भूप ने भोजन तभी जिमाया ।
पूछा परिचय "श्री पाल" से आदि अन्त बतलाया ॥
क्षत्रिय कुल का कुमर जान कर भूपति अति हर्षाया ।
निज कन्या से ब्याह कर दिया हिल मिल प्रेम बढ़ाया ॥

॥ दौड़ ॥

नृप ने सत्कार किया है, बहुत सन्मान दिया है ।
प्रेम से समय बितावे
एक समय "श्री पाल" गमन हित नृप को विनय सुनावे ॥

॥ दोहा ॥

समझाने पर भी बहुत नहीं माने "श्री पाल" ।
अतिथि कब तक ठहरते सोचा मन भूपाल ॥

॥ राधेश्याम ॥

फिर गमन हेतु तैयारी की नगरी को अधिक सजाया है ।
सब नगर निवासी लोगों ने खुश हो कर हर्ष बढ़ाया है ॥

कर गजा रूढ़ "श्री पाल" कुमर नृप ने सब रीति निभाई है।
"श्री मदन सुन्दरी" पुत्री भी गज के ऊपर बिठलाई है॥

॥ दोहा ॥

आये सिन्धु तक छोड़ने, मात पिता नर नार।
शिक्षा दे अति प्रेम से, विदा किये मन मार॥

॥ राधेश्याम ॥

अब यान नीर को चीर चला और बीच सिन्धु के आया है।
तब धवल सेठ के हृदय बीच दुष्कृत ने डेरा लाया है॥
खाली हाथों यह आया था पर इस का भाग्य फला कैसा।
राजा की राज सुता ले के मानों लगता भूपति जैसा॥
मेरे भी ढाई सौ यानों का यह स्वामी बन कर बैठ रहा।
अब यान किराया क्या मांगू मन में अपने यह ऐंठ रहा॥

※ संगीत ※

(तर्ज—द्रोण ध्वनि ....)

यह पुण्य पाप का लेखा सेठ विचारे
महाराज किसी का ज़ोर न चलता जी।
जब होय पुण्य का ज़ोर तभी सुख सारा मिलता जी ॥टेक॥

अब धीरे धीरे रत्न द्वीप में आया —
महाराज तीर पर यान लगाया जी।
सब वस्तु उतार सेठ ने अपना दान चुकाया जी॥

अब लगे व्योपारी अपने अपने कारज –
महाराज माल भी अधिक महंगाया जी ।
जो सस्ते दामों भर कर लाया लाभ उठाया जी ॥

॥ दोहा ॥

महंगे भाव विचार कर सेठ कहे तत्काल ।
कुमर ढाई सौ यान तव क्यों नहिं बेचे माल ॥

॥ द्रोण ध्वनि ॥

तव कुमर कहे तुम बेचो माल हमारा –
महाराज अन्य चीजें फिर भरना जी ।
वस इतना सा है काम हमारा हृदय धरना जी ॥
अब धवल हृदय में खुशी हुआ है भारी –
महाराज लाभ विन कभी न टलता जी ।
जब होय पुण्य का ज़ोर तभी सुख सारा मिलता जी ॥

॥ दोहा ॥

हेरा फेरी से इधर करे सेठ व्यापार ।
उधर भ्रमण करते फिरें पुर में राज कुमार ॥
रत्न द्वीप सुन्दर महा स्वर्ग पुरी सा धाम ।
नर नारी राजा प्रजा सुख से रहें तमाम ॥

॥ राधेश्याम ॥

जहां तरह तरह के पीठ खुले नगरी की शान बढ़ाते हैं ।
आ–आ कर दूरों व्योपारी अप–अपना काम चलाते हैं ॥

कहीं वस्त्र पीठ कहीं रत्न पीठ कहीं शाक पीठ शोभाते हैं
हैं बाग बगीचे खिले हुये नर नारी दिल बहलाते हैं।
हैं जगह जगह धर्मालय भी जहाँ धर्मी धर्म कमाते हैं
वहां कनक केतु नृप देख प्रजा सुख फूले नहीं समाते हैं।

॥ दोहा ॥

कनक केतु भूपाल के विनय माल पटनार।
"रैन मंजूषा" कन्यका इन्द्र सुता साकार॥

॥ राधेश्याम ॥

जब हुई युवा कन्या प्यारी नृप वर की चिन्ता करते हैं
कोई योग्य मिले वर विवाह करूँ मन में यह निश्चय धरते हैं।
कुछ दिनों बाद उस नगरी में मुनि मण्डल चल कर आया है
नगरी का या उस कन्या का कुछ समझो पुण्य सवाया है।
मुनियों के आने की चर्चा चपला सम पुर में फैल गई
दर्शन करने भूपाल चले तो "रैन मंजूषा" गैल गई।
सर्वज्ञ देव की वाणी सुन जनता का मन हर्षाया है।
मुनि कथा पूर्ण हो जाने पर नृप ने यों भाव जताया है॥
हे दीन बन्धु ! सर्वज्ञ देव घट घट के भगवन् ज्ञाता हो।
क्या भूत भविष्यत वर्तमान सब के ज्ञाता हो त्राता हो॥
इस सुता "रैन मंजूषा" का गुणवान कौन प्रियवर होगा।
मेरी यह चिन्ता दूर करो उपकार बड़ा गुरुवर होगा॥

॥ दोहा ॥

मुनि बोले भूपाल से तेरा शुभ शुण्डाल ।
गज शाला से मस्त हो भागेगा तत्काल ॥

॥ राधेश्याम ॥

जो कोई नर उस गयवर को अपने वश में कर पायेगा ।
वह प्राणी ही इस कन्या का समझो प्रिय वर कहलायेगा ॥
सुन कर मुनिवर के वचन भूप मन में अति हर्ष मनाता है ।
तुम रखो दृष्टी शुण्डालों पर भृत्यों को हुकम सुनाता है ॥

॥ दोहा ॥

जो होनी हो कर रहे शत शत करो उपाय ।
सर्वज्ञों की सज्जनों वाणी टलती नाय ॥

—० हरि गीतिका ०—

कुछ समय के बाद नृप का खास पट धर गज महा ।
उन्मत्त हो कर का भाग निकला हिल उठी सर्वसहा ॥
जो भी गज सन्मुख गया यम लोक उस का घर बना ।
इस तरह से नगर सारा कष्ट का सागर बना ॥
संत्रस्त मारे से रहे वे चैन सब नर नार हैं ।
यत्न नृप के एक दम सब हो गये बेकार हैं ॥
एक दिन शुण्डाल फिरते फिरते सागर पर गया ।
उन्मत देखा कुमर ने तो पीठ पर झट चढ़ गया ॥

कस कस के मुक्के जब दिये तो मान सारा खो गया।
बुद्धि ठिकाने आ गई "श्री पाल" के बश हो गया॥

॥ दोहा ॥

भूपति यह खबर सुन तुरत उदधि पर आय।
देख कुमर को एक दम लीना गले लगय॥

॥ चौबोला ॥

लीना गले लगाय कुमर को प्रेम सहित समझावे।
एक समय मुनि ने बतलाया जो गज वश कर पावे॥
"रैन मंजूषा" का वर सुन्दर वही पुरुष कहलावे।
अतः चलो घर देर करो मत भूपति विनय सुनावे॥

॥ दौड़ ॥

सुता मेरी वर लीजे, दया अब मुझ पर कीजे।
कुमर ने वचन सुनाया
अन जाने को कन्या देते भूप हृदय क्या आया॥

॥ दोहा ॥

मुनियों से मैं सुन चुका क्षत्रिय कुल अवतार।
कन्या को जो व्याहेगा निश्चय राज कुमार॥

॥ चौबोला ॥

निश्चय राज कुमार प्रेम से भूप महल में लाया।
हीरे पन्ने जवाहरात का मण्डप एक बनाया॥

सुन्दरता में ऐसा मानों स्वर्ग उतर कर आया।
शुभ मुहूर्त में "श्री पाल" से पाणि ग्रहण कराया॥

॥ दौड़ ॥

ग्रहण कर राज कुमारी, कुमर भोगे सुख भारी।
पुनः मुनि दर्शन हेतु
चला कुमर श्रद्धा से साथ में आया भूपति केतु॥

॥ दोहा ॥

सुनते मुनिवर की कथा दोनों पुण्य प्रधान।
कोतवाल तव नगर का वोला ऐसे आन॥

॥ चौबोला ॥

बोला ऐसे आन दान का तस्कर स्वामिन् लाया।
जो आज्ञा सो करूँ कनक केतु ने हुकम सुनाया॥
शीघ्र दण्ड दो देर करो मत कुमर कहे सुन राया।
धर्मालय में आके भी क्यों ऐसा हुकम चलाया॥

॥ दौड़ ॥

प्रथम तुम चोर बुलावो, पूछ कर हुकम सुनावो।
सुभट तस्कर को लावे
चोर रूप में देख धवल को "श्री पाल" बतलावे॥

॥ चौपाई ॥

भूपति सुन यह वचन हमारा।
कोटि ध्वज है सेठ अपारा॥

यान ढ़ाई सौ इस के भारी ।
नगर नगर का यह व्योपारी ॥
यही साथ में मुझ को लाया ।
धर्म पिता इस को ठहराया ॥
विनती कर नृप से छुड़वाया ।
पुनः भूप से आदर पाया ॥

॥ दोहा ॥

रत्न द्वीप में सभी जन भोगें सुख सामान ।
राज कुमर से एक दिन कहे सेठ जी आन ॥

॥ राधेश्याम ॥

पिछली चीजें सब बेच बाच फिर नये माल से यान भरा ।
सब लोग यान के कहते हैं अपने घर का लो ध्यान ज़रा ॥
इस जगह बहुत दिन बीत गये अब जल्दी से प्रस्थान करो ।
है भला इसी में हम सब का अब चलने का सामान करो ॥

※ संगीत ※

(तर्ज—जिन शासन नायक ....)

यह पुण्य कहानी जग में सुखदानी है ।
"श्री पाल" की ॥ टेक ॥

सुन कर वाणी धवल सेठ की बोले नृप से आय ।
बहुत दिनों तक ठहर लिया मैं प्रेम मूर्ति महाराय ॥
सुना वचन जब "श्री पाल" का चिंतित भूप अपार ।
मांगे भूषण पर ममता क्या परदेशी से प्यार ॥

गमन हेतु जब की तैयारी यों बोला भूपाल ।
सुख से मेरी पुत्री रखना सुनो कुमर सुख माल ॥
अपर कुमारी ग्रहण करो यदि इस को नहीं भुलाना ।
गलती हो इस से यदि कोई प्रेम सहित समझाना ॥
नहीं करना इन्कार कभी जो सत्संग में यह जावे ।
इस प्रकार की शिक्षा सुन कुमर कर महा सुख पावे ॥

॥ दोहा ॥

इधर कुमर को भूप ने शिक्षा दी सुखकार ।
उधर मात निज सुता से कहे वचन हितकार ॥

॥ राधेश्याम ॥

बेटी! तन मन वचनों से पति भक्ति हृदय में अपनाना ।
र सासु श्वसुर की शुभ सेवा जीवन बगिया को महकाना ॥
शील धर्म ही नारी का इस पर दृढ़ ध्यान जमा लेना ।
न पद का जाप सदा जपना जी भर कर धर्म कमा लेना ॥
पति को ऐसी शिक्षा दे अत्यंत हर्ष से विदा किया ।
कर चाकर हाथी घोड़े जी खोल खूब धन माल दिया ॥

॥ दोहा ॥

चले कुमर जी यहां से, ले कर अति धन माल ।
दोनों रमणी साथ में, भोगे सुख "श्री पाल" ॥
नव पत्नी से मार्ग में यों पूछे "श्री पाल" ।
परदेशी को दी सुता क्या सोची भूपाल ॥

॥ चौवोला ॥

क्या सोची भूपाल तभी "मंजूपा" ने बतलाया।
हे स्वामिन् श्री पिता देव ने जो कुछ भी फर्माया॥
उस ही के अनुसार आप सा मैंने प्रियवर पाया।
उदय भाग्य हो आये मेरे दिन दिन पुण्य सवाया॥

॥ दौड़ ॥

वचन सुन मन सुख पाया कुमर ने भेद बताया।
कोटि भट हूँ बल धारी
चम्पा पुर से आदि अन्त की कथा सुनाई सारी॥

॥ दोहा ॥

दुःख गाथा सुन कर कहे "रैन मंजूषा" नार।
धन्य भाग्य मेरा हुआ मिले आप भरतार॥
सीता को ज्यों राम थे रुक्मणि कृष्ण मुरार।
प्राण नाथ मेरे लिये एक आप आधार॥

॥ चौपाई ॥

दम्पति ऐसे बातें करते।
उधर यान जाते हैं तरते॥
सागर मध्य यान जब आया।
धवल सेठ उर पाप समाया॥
सम्पत् देख महा दुःख पावे।
कर्म किस तरह खेल खिलावे॥

राज कुमर एकाकी आके।
धनी बन गया द्रव्य कमाके ॥
चाल जाल अब ऐसा सोचूँ।
"श्री पाल" को तुरत दबोचूँ ॥

* संगीत *

(तर्ज—आजादी को लिया है तुमने ....)

देख कुमर को जले धवल मन यह तो बताओ कैसे ?
चाँद देख तस्कर दुःख पावे मैंने कहा कि ऐसे।
सम्पत्ति को चाहे हड़पना यह तो बताओ कैसे ?
सूर्य चन्द्र को लगे ग्रहण ज्यों मैंने कहा कि ऐसे।
धवल सेठ का हृदय जल गया यह तो बताओ कैसे ?
वर्षा में ज्यों जले जंवासा मैंने कहा कि ऐसे।
नारी देख सेठ ललचाया यह तो बताओ कैसे ?
दीपक पर परवाना ललचे मैंने कहा कि ऐसे।
भोगेगा फल इन बातों का यह तो बताओ कैसे ?
रावण कीचक ने ज्यों भोगा मैंने कहा कि ऐसे।

॥ दोहा ॥

लोभ रोग सम भोग ये दोनों दुःख की खान।
आज सेठ के हृदय को दोनों चिपटे आन ॥

इसी फिक्र में सेठ जी रहते हैं बेचैन।
देख दशा "श्री पाल" तब बोला ऐसे बैन ॥

॥ राधेश्याम ॥

हे जनक! मुझे बतला दीजे किस चिन्ता में चित आया है
कोमल काया क्यों मुर्झाई किस लिये हृदय कुम्हलाया है।
क्या पीड़ा कोई तन में है जिस ने यह जिस्म सुखाया है
अपराध बना मुझ से कोई या कटुक बचन सुन पाया है।
सब साफ साफ बतला दीजे जो रोग बदन में छाया है
मैं करूँ चिकित्सा वैसी ही यह मेरे मन में आया है।

॥ दोहा ॥

सुने वचन "श्री पाल" के बोला धवल विचार।
कभी कभी सुत! वायु दुःख देवे कष्ट अपार ॥

॥ राधेश्याम ॥

दश पांच वर्ष में कभी कभी यह रोग वदन में आता है।
यह स्वयं ठीक हो जावेगा क्यों मन में दुःख तू पाता है ॥
सुन सेठ वार्ता "श्री पाल" फिर निज महलों में आया है।
उस ओर सेठ को चिंताओं ने अति बेचैन बनाया है ॥

* मनुष्यजमारो *

चार मित्र निज धवल सेठ के झट पट उन को बुलवाये।
हाल कहा निज मन का उनसे सुन कर अति विस्मय पाये ॥
यह अकृत्य भला क्या सोचा यह तो पाप बड़ा भारी।
पुत्र समान कुमर लगता है पुण्यवान् भुज बलधारी ॥

भांति भाँति सब ने समझाया एक नहीं पर मन लाया ।
रावण पद्मोत्तर कीचक का हाल हुआ क्या बतलाया ॥
जैसे ज्वर से पीड़ित जन को मीठा भी कड़ुवा लगता ।
इसी भांति से धवल सेठ को ज्ञान ज़हर गड़ुवा लगता ॥
ठीक कहा है विद्वानों ने नाश समय जब आता है ।
भांति भांति के पाप हृदय में मानुष अपने लाता है ॥
गीदड़ का जब अन्त समय हो ग्राम ओर वह जाता है ।
"नाश काल में बुद्धि नाश हो" शास्त्र ठीक बतलाता है ॥
एक नहीं जब मानी शिक्षा तीन मित्र उठ धाये हैं ।
जो इच्छा सो करो सेठ जी कह कर निज घर आये हैं ॥
कुमति नाम का मित्र सेठ को धीरज दे समझाता है ।
दुःख सुख में मैं साथ तुम्हारे निश्चय पूर्ण दिलाता है ॥

॥ दोहा ॥

पाप पुण्य कुछ भी नहीं सुनो सेठ धर ध्यान ।
लक्ष्मी का संचय करो जब तक तन में प्राण ॥

॥ चौबोला ॥

जब तक तन में प्राण हमेशा जीवन सुखी बिताओ ।
अगर नहीं है माया घर में चोरी कर के लाओ ॥
कर्जा ले कर सदा सेठ जी मौजें खूब उड़ाओ ।
पंच भूत का पुतला है यह भय मत मन में खाओ ॥

॥ दौड़ ॥

देह मिट्टी में जावे, पता नहीं इस का पावे।
यही है शिक्षा भारी
खालो पीलो मोज उड़ालो जन्म न बारम्बारी ॥

॥ दोहा ॥

इस प्रकार से कुमति ने कहे वचन अविचार।
धवल सेठ को खांड से लगे मिष्ठ सुखकार ॥
करे कुमति अब यत्न वह बने धवल का काम।
आगे पीछे कुमर के फिरे सुबह और शाम ॥

॥ राधेश्याम ॥

मीठी बाणी से "श्री पाल" के कुमति सदा गुण गाता है।
हे कुमर तुम्हारे कारण से यह सेठ पा रहा साता है ॥
यदि साथ न तुम इसके होते मालूम न कितना दुःख पाता।
यों राज कुमर के मन में वह छलिया कपटी घुसता जाता ॥

॥ दोहा ॥

भूप चित्त और कृपण धन दुष्ट पुरुप के भाव।
नारि चरित जाने न सुर फिर नर की क्या ताव ॥

॥ राधेश्याम ॥

इस ओर कुमर पर दुष्ट कुमति यों अपना जाल रचाता है।
उस ओर सेठ को सुमति मित्र जाकरके फिर समझाता है ॥

हे सेठ विचारो! सोचो तो! क्यों कुल को दाग लगाते हो।
अपने यश को धन दौलत को क्यों मिट्टी बीच मिलाते हो॥
पति व्रता पत्नि होने पर भी क्यों अपनी दृष्टी विगड़ी है।
सुत वधुओं पर यों भान भुला क्यों सुकृत बेल उखाड़ी है॥
मैं वार बार समझाता हूँ नहीं हाथ तेरे ये आयेंगी।
ये पति व्रता नारी दोनों निज धर्म हेतु मर जायेंगी॥
षड़ यंत्र रचा जितना तू ने निष्फल सारा ही जायेगा।
यदि "श्री पाल" ने सुन पाया तो तेरी शामत लायेगा॥

॥ दोहा ॥

पर नारी को मात सम, पर धन धूल समान।
सब जीवों को आत्म सम, माने वही महान॥
ज्वर से पीड़ित मनुज को, कड़वी लगे कुनैन।
उसी भांति से सेठ को, लगते कड़वे वैन॥
मरने का नहीं भय मुझे, होनी होय सो होय।
काम बने अब शीघ्र ही, रोक सके नहीं कोय॥
राय न तेरी चाहिये, जाकर कर निज काम।
कुमति मित्र मेरा बड़ा, कर ले काम तमाम॥

–० हरि गीतिका ०–

यह वचन सुन कर सुमति ने निज भवन का रस्ता लिया।
आया कुमति उस ही घड़ी अति पाप से भर कर हिया॥

बोला कुमर को उदधि में अब गेर देना चाहिये।
धन माल क्या जलयान सब कुछ घेर लेना चाहिये॥
कान में यह बात कह कर कुमति वहां से टल गया।
यान की छत पर धवल फिर एक दम है चढ़ गया॥
झट पुकारा ज़ोर से आओ कुमर जी दौड़ कर।
देखिये अद्‌भुत बड़ा है आठ मुख वाला मगर॥
आश्चर्य के ये शब्द सुन झट पट कुमर जी आ गये।
कर्म की माया में मानों आज हैं भरमा गये॥

॥ दोहा ॥

कुमर झाँकते उदधि में अति ही अचरज मान।
रस्सी काटी कुमति ने गिरे सिन्धु दरम्यान॥
दुष्ट न छोड़े दुष्टता कर लो यत्न हजार।
ऐसे पापी जीव को बार बार धिक्कार॥
असले में जिन के फरक भला न उन से होय।
समय पड़े पर दें दगा रोक सके नहीं कोय॥
चूहे हंस की लघु कथा सुनना ध्यान लगाय।
कर्मों के आगे नहीं चलता कोई उपाय॥

* संगीत *

(तर्ज—द्रोण ध्वनि ....)

चाहे जितना उपकार दुष्ट पर करिये —
महाराज नीच जन कभी न टलता जी।

वह समय देख कर अपने मन से पाप उगलता जी ॥
थे भांति भांति के वृक्ष किसी जंगल में —
महाराज पक्षी गण सुख से रहते जी ।
सर्दी गर्मी के सभी कष्ट निज तन पर सहते जी ॥
एक वृक्ष डाल पर हंस मनोहर रहता —
महाराज उसी की कथा पुरानी जी ।
जो सुन कर त्यागे दुष्ट भाव वह उत्तम प्राणी जी ॥
उस तरु की जड़ में चूहा रहे अकेला —
महाराज हंस को मित्र बनाया जी ।
दोनों रहते सुख बीच समय वर्षा का आया जी ॥

॥ दोहा ॥

पानी से बिल भर गया चूहा है लाचार ।
देख हाल यह मित्र का हंसा करे विचार ॥

—(संगीत द्रोण)—

जिस को मैं मित्र कहा अपनी जिह्वा से —
महाराज कष्ट वह कैसा भरता जी ।
यह जीवन है धिक्कार ख्याल नहीं उस का करता जी ॥
फिर तरु से शीघ्र उड़ारी हंस लगाई —
महाराज चोंच में चुहा सम्भलना जी ।
वह समय देख कर अपने तन से पाप उगलता जी ॥

॥ दोहा ॥

गिरि पर चूहा जा रखा दया हृदय में धार ।
सर्दी से कांपा वदन हंसा करे विचार ॥

॥ चौबोला ॥

हंसा करे विचार तुरत ही पंखों बीच दवाया ।
गर्मी पहुँची जब छाती की चुहा होश में आया ॥
कोठी सी में वंद देख कर मन में अति घवराया ।
जाति भाव से पंख कुतर पापी ने पाप कमाया ॥

॥ दौड़ ॥

दया नहीं मन में लाया दुष्ट ने दाव चलाया
मनुप जैसे विन कर के
वैसे ही पक्षी का जीवन निष्फल है विन पर के ।

॥ दोहा ॥

पंख काट कर चुहा झट आया बिल मंझार ।
शांति पूर्वक हंस ने सहे कष्ट मन मार ॥

॥ राधेश्याम ॥

संतोष हृदय में धारण कर हंसा वैठा चुप चाप वह
लेकिन उस पापी मूपक का कुछ भला न होगा यहां वहां
कितना ही दूध पिला दीजे पर सर्प नहीं विष तजता है
वस इसी तरह से दुष्ट पने से दुष्ट कभी नहीं टलता है

नहीं कथा अधिक लम्बी करनी अगला वृत्तान्त सुनाना है।
"श्री पाल"उदधि में गिरा उधर उस का भी हाल बताना है ॥
कुछ ही दिवसों के अन्तर में हंसा सुर लोक सिधार गया।
और चूहा मरा मर कर सीधा नरकों में यम के द्वार गया ॥

॥ दोहा ॥

करनी का फल पा गया मूषक दुष्ट महान्।
उधर सिन्धु में जा पड़े कोटि भट बलवान ॥

॥ राधेश्याम ॥

गिरते नव पद का ध्यान किया नहीं किंचित् भी घबराये हैं।
चढ़ा हुआ था पुण्य महा इक मगर पीठ पर आये हैं ॥
कुछ मगर मच्छ का आश्रय ले कुछ अपने भुजबल के द्वारा।
इस तरह तैरते पार हुये रत्नाकर सारा मथ डारा ॥

॥ दोहा ॥

प्रबल पुण्य जिस मनुज का मार सके नहीं कोय।
चाहे वैरी विश्व हो बाल न बांका होय ॥

॥ राधेश्याम ॥

सागर से निकले राज कुमर कुंकुम वन में आ जाते हैं।
कुंकुम ही दीप निकट में है स्वर्गों जैसा बतलाते हैं ॥
कुछ थके हुये थे अतः कुमर तरु के नीचे सो जाते हैं।
पुण्यवान् जहां पर जाते हैं आनंद वहीं पर पाते हैं ॥

जब कुमर नींद से जाग उठे कुछ देखा अचरज पाये
स्वप्ना है या मैं जाग रहा इस भाँति सोच में आये।
चहुँ ओर सुभट तैनात खड़े सविनय सब शीश झुकाये
बोले हे भगवन् विनय सुनो हम कुंकुम पुर से आये है
है पुण्यपाल भूपाल जहां वनमाला जिस की राणी
सुन्दर गुणमाला कन्या भी लगती सचमुच इन्द्राणी है
इक रोज़ बड़ा भारी ब्राह्मण भूपाल सभा में आया थ
विद्वान् समझ कर राजा ने उस से यह प्रश्न चलाया था
हे विप्र ! हमारी कन्या का भरतार कौन कहलायेग
क्या लक्षण उस नर के होंगे जो गुणमाला को व्याहेगा
सुन वचन ज्योतिषी जी बोले सुन राजन् ध्यान लगा करके
वैशाख सुदी दशमी के दिन आयेगा खुशी मना करके
सागर से तर कर जो भी नर उस दिन दुपहर को आयेगा
कुंकुम वन में लेटा होगा भरतार वही कहलायेगा।
चम्पक तरु की शुभ छाया में विश्राम करेगा आ करके
वह पुण्यवान अति ही होगा मैं कहता हूँ समझा करके।
जिस तरु नीचे सोया होगा छाया नहीं उस की जावेगी।
कन्या तेरी हे धराधीश ! ऐसा सुन्दर वर पावेगी॥
सुन वचन ज्योतिषी के नृप ने अपना विश्वास जमाने को।
भेजा है हम को समझा कर सच झूठ भेद सब पाने को॥

सब लक्षण तुम में मिलते हैं द्विजवर ने जो बतलाये हैं।
अब चलो हमारे साथ कुमर हम तुम्हें बुलाने आये हैं॥

॥ दोहा ॥

सभी भेद सुन कर कुमर अति अचरज के साथ।
घोड़े पर चढ़ चल दिये गाते प्रभु गुण गाथ॥

॥ चौबोला ॥

गाते प्रभु गुण गाथ कुमर झट राज सभा में आया।
हाल कहा जब सुभटों ने नृप सुनकर अति हर्षाया॥
पण्डित जी को मिली बधाई मान कुमर ने पाया।
"श्री पाल" से "हां" करवा कर मण्डप एक रचाया॥

॥ दौड़ ॥

प्रेम से व्याह रचाया, भूप अति ही हर्षाया।
कुमर को अति धन दीना
पृथक् महल में गुण माला संग सुख से डेरा कीना॥

॥ दोहा ॥

रहते हैं आनन्द से राणी राज कुमार।
सुख में बीते रात दिन जपें मंत्र नवकार॥
इस प्रकार बहु भांति से बीत रहा था काल।
"गुणमाला" ने एक दिन पूछा पिछला हाल॥
पत्नि का यह प्रश्न सुन बोल उठे "श्री पाल"।
कोई नहीं मेरा सगा क्या बतलाऊँ हाल॥

हँसी न मुझ से कीजिए बोल उठी यों नार।
उदित सूर्य छिपता नहीं जाने सब संसार ॥

॥ चौबोला ॥

जाने सब संसार कुमर ने पिछला हाल बताया।
चंपा पुर का राजा हूँ उज्जयनी नगरी आया ॥
"मैना" के संग ब्याह कराके कानन बीच सिधाया।
सेठ साथ , फिर बबर सुता से मैंने व्याह रचाया ॥

॥ दौड़ ॥

रत्न द्वीप में आया पुनः उद्वाह कराया।
"रैन मंजूषा" पाई
गिरा सिन्धु में किस्मत मुझ को यहां बहा ले आई ॥

॥ दोहा ॥

व्यथा कथा सुन कुमर की बोली "माला नार"।
धन्य जन्म मेरा हुआ मिले आप भरतार ॥
इधर प्रेम से दम्पति भोगें भोग अपार।
उधर यान की ओर भी आओ सब नर नार ॥

॥ राधेश्याम ॥

जब गिरे कुमर जी सागर में तो धवल हृदय हर्षाता है।
अब कामबने निश्चय मेरा दिल में यह भाव जमाता है ॥
लेकिन दुनियां को दिखलाने ऊपर से ढोंग रचाता है।
गिर गये कुमर झट पट दौड़ो ऐसा कह शोर मचाता है ॥

ये धवल सेठ के शब्द यान में जो नर नारी सुन पाये।
चपला की भांति दौड़ पड़े मानो हमदर्दी वन आये॥
कहां गिरे कुमरकवगिरे कुमरचहुँ ओर शब्दगुंजार उठा।
हो गया अमंगल है भारी जनरव इस भांति पुकार उठा॥

॥ दोहा ॥

लोक दिखावे को धवल करता रुदन अपार।
शोक पूर्ण हो कर सभी दुखी हुये नर नार॥

॥ राधेश्याम ॥

चम्पा दासी दौड़ी दौड़ी रोती चिल्लाती आई है।
अन्याय हो गया हाय! वड़ा यों कह कर के चिल्लाई है॥
दोनों ही राणियों से आ कर घवरा कर वात सुनाई है।
गिर पड़े कुमर सागर अन्दर दुःख घटा उमड़ कर आई है॥
पहले तो हंसी मखौल समझ दोनों ने उसे लताड़ दिया।
जीवन धन है वलवान वड़े ऐसा कह कर दुत्कार दिया॥
पर जिस दम कोलाहल भारी निज कानों से सुन पाई हैं।
सुनते ही मूर्छित हो दोनों धरणी के ऊपर आई हैं॥

॥ दोहा ॥

दास दासियों ने तभी इतर फुलेल सुंघाय।
करी सचेतन राणियां करके उचित उपाय॥

॥ राधेश्याम ॥

हे प्राण नाथ! किस ओर गये इतना तो ज़रा वता जाते।
क्यों उदधि वीच में छोड़ गये कुछ राह हमें दिखला जाते॥

नयनों से ऐसी झड़ी लगी दु:ख सिन्धु एक दम उमड़ पड़ा।
गंगा जमुना भी मात हुई कुछ ऐसा वादल घुमड़ पड़ा॥

* विलाप गीत *

दु:ख कैसा पड़ा आज भारा--पति देव ने कीना किनारा।
आज किस को व्यथा हम सुनायें,हाय! किसके सहारे में जायें।
कौन देगा हमें अब सहारा--पति देव ने कीना किनारा।
पूर्व जीवन में नारी का पीका,नाता तुड़वाया होगा किसीका।
फल उसी का मिला यह अपारा--पति देव ने कीना किनारा।
हाय! माता पिता जव सुनेंगे,दु:ख में रोरो के सिर को धुनेंगे।
कष्ट पायेगा परिवार सारा--पति देव ने कीना किनारा।
दु:ख से फटफट के आतीहै छाती,मौत भी अबतो आंखेंचुराती।
कौन पति बिन साथी हमारा--पति देव ने कीना किनारा।

॥ दोहा ॥

इस प्रकार दोनों जनी रोवें ज़ारों ज़ार।
देख हाल यह सुमति जी बोले दया विचार॥

॥ राधेश्याम ॥

हे माताओं मत रुदन करो मन में कुछ अपने धैर्य धरो।
यह कर्म चक्र बलवान वड़ा इन वचनों पर विश्वास करो॥
नहीं कुमर मरे सागर में पड़ यह मेरा मन वतलाता है।
बलवान् महा तिर जायेंगे मन मेरा मुझे सुझाता है॥

जो होन हार हो कर रहती नही इसको कोई टाल सके ।
इस भीम भयंकर सागर में नहीं कोई कुमर को भाल सके ॥

॥ दोहा ॥

सुमति मित्र के सुन वचन बोली दोनों नार ।
धैर्य हृदय कैसे धरें लें किस का आधार ॥
भांति भांति से सुमति ने समझाया हर बार ।
किन्तुहृदय नहीं शांतहो करती हा! हा! कार ॥
गहने आभूपन सभी दीने तुरत उतार ।
पति के विन सब पाप हैं ये शोभा शृंगार ॥
समझा कर के सुमति जी पहुँचे निज आवास ।
धवल सेठ भी आ गया झट सतियों के पास ॥

—० हरि गीतिका ०—

झूठा रुदन करता हुआ आया धवल तत्काल है ।
बोला सती से धैर्य धर कर्मों की सारी चाल है ॥
जो था तुम्हारे भाग्य में वह सामने सब आ गया ।
वापिस कुमर आता नहीं इक मगर उस को खा गया ॥
ध्यान उसका दूर कर मुझ को ही पति अब मान लो ।
नहीं कष्ट हो किंचित् तुम्हें धन माल अपना जान लो ॥
"श्री पाल" मेरा भृत्य था धोखा तुम्हें उस ने दिया ।
जितनी भी उस की वस्तु हैं कब्जा सभी पर कर लिया ॥
मैं प्रेम से समझा रहा बन जाओ मेरी नारियां ।
उस से अधिक आनन्द हो भर जायें सुख की क्यारियां ॥

॥ दोहा ॥

वक्र वचन सुन कर तभी सोचें दोनों नार।
इस पापी ने सिंधु में गेरे हैं भरतार॥
"रैन मंजूषा" ने तभी दीनी यों फटकार।
कामी कुत्ते लालची बार बार धिक्कार॥

॥ राधेश्याम ॥

गिर गये कुमर सागर अन्दर क्यों झूठा शोर मचाता है
यों नहीं कहता खुद गेरे हैं क्यों अपना पाप छिपाता है।
यह वचन सती के धवल सेठ नहीं सहन ज़रा कर पाता है
जैसे दिन करके आने पर उल्लू मन में घबराता है।

॥ दोहा ॥

घबरा करके सेठ जी आये निज आवास।
दूती भेजी एक फिर उन सतियों के पास॥

॥ राधेश्याम ॥

दूती सतियों के निकट आन कर अपना जाल बिछाने लगी
हे कन्याओं! दुःख दूर करो मन उनका यों बहलाने लगी।
तुम लाख यत्न करना बेटी पर मरा न वापिस आता है
मैं बार बार समझाती हूँ यह जग का झूठा नाता है॥
है पुण्यवान मशहूर बड़ा यह धवल सेठ जग नामी है।
तुम इस के ही संग सैल करो यह काम देव सा कामी है॥

था "श्री पाल" चाकर इस का मैं साफ साफ बतलाती हूँ।
लीना था इस ने मोल उसे मैं तुम्हें आज जतलाती हूँ॥
यदि यह मौका तुम चूक गई तो पीछे से पछताओगी।
हो धवल सेठ के कब्जे में अब दौड़ कहां पर जाओगी॥
जब देखा सतियों ने दूती अति बक्र बक करती जाती है।
निर्भय हो कड़की बिजली सी क्यों सिर पर चढ़ती आती है॥
हे धर्म श्वसुर यह धवल सेठ तू मन के बीच विचार ज़रा।
पहिले हृदय में तोल ज़रा फिर जिव्हा खोल उचार ज़रा॥
हो दूर यहां से पापिन तू क्यों नाहक हमें सताती है।
नर्कों में जा दुःख पायेगी क्यों ऐसा पाप कमाती है॥

॥ दोहा ॥

तेज देख यह सती का वह दूती तत्काल।
धवल सेठ के पास आ खोल उठी सब हाल॥
हाथ लगे नहीं सेठ जी दोनों सतियां नार।
त्यागो उनके मोह को छोड़ो विषय विकार॥
सुमति मित्र भी आन कर समझाते बहु बार।
नहीं किसी की भी सुनी दी-सब को फटकार॥

॥ चौबोला ॥

दी सब को फटकार सेठ फिर सती पास चल आया।
कहे प्रेम के वचन सती से तनिक नहीं शर्माया॥

अय मन हरणी हृदय बीच क्यों आरत ध्यान समाया।
शोक हरो सब मन का अपने मानो अपना राया॥

॥ दौड़ ॥

भाग्य है खिला तुम्हारा मिला मुझ सा पति प्यारा।
हृदय का राजा मानो
धन दौलत सब माल खजाना अपना ही अब जानो।

॥ दोहा ॥

धिक् ऐसी सम्पत्ति को और तुम्हें धिक्कार।
पाप कर्म से पाओगे निश्चय यम का द्वार॥

॥ चौबोला ॥

निश्चय यम का द्वार सती ने भांति भांति समझाया।
रावण पश्नोत्तर इन सब का सारा हाल सुनाया॥
होनी का था चक्र महा बस एक नहीं मन लाया।
वलात्कार के हेतु दुष्ट ने अपना हाथ बढ़ाया॥

॥ दौड़ ॥

सती मन भय में आया शील ने धर्म बचाया।
हुआ कौतुक तत्काला
घटा छा गई घोर चमक चपला नें किया उजाला॥

॥ दोहा ॥

मेघ गरज विजली कड़क छाई चारों ओर।
महा वायु के साथ में जल वरसा घन घोर॥

–० हरि गीतिका ०–

चक्रेश्वरी देवी स्वयं कर चक्र अपने धार कर।
पञ्चास्य[1] पर असवार हो आई तुरत हथियार धर॥
क्षेत्र पालक देवता भी साथ में आया वहां।
शुभ शील रक्षक देवता झट एक दम धाया वहां॥
यान सब कम्पित हुआ यात्री सभी घबराये हैं।
विकाल बन चक्रेश्वरी ने सेठ जी धमकाये हैं॥
हे दुष्ट पापी नीच जन अब ले मजा अन्याय का।
निज घर वना यम लोक में ले फल सती की हाय का॥
चक्रेश्वरी ने चक्र अपनी तर्जनी पर ले लिया।
बोली कि अब तैय्यार हो तैंने सती को दुख दिया॥

॥ दोहा ॥

देवी के सुन कर वचन सेठ हुआ बेहाल।
सती चरण में आ पड़ा घबरा कर तत्काल॥

॥ राधेश्याम॥

बोला हे माता क्षमा करो मैं शरण तुम्हारी आया हूँ।
अपराध हुआ मुझ से भारी जिस ने मैं दुखी बनाया हूँ॥
अब क्षमा करो कुछ दया करो बच्चे भूखे मर जायेंगे।
मरते को आश्रय दे दो माँ! "श्री पाल" तुम्हें मिल जायेंगे॥

(१) पञ्चास्य—शेर।

॥ दोहा ॥

गिड़ गिड़ाट सुन सेठ की दया हृदय में धार ।
सतियां देवी से तुरत बोली समय विचार ॥

॥ राधेश्याम ॥

हे मात! इसे अब क्षमा करो भय से इसका उद्धार करो ।
पतिदेव मिलेंगे कब हमको यह बतलाकर उपकार करो ॥
सुन सती विनय देवी बोली हे बेटी अब मत घबराओ ।
"श्री पाल"कुमर हैं सुखी महा अपने मन में निश्चय लाओ ॥
महीने के अन्दर अन्दर ही पति मिलें तुम्हें निश्चय करलो ।
तल्लीन रहो निज धर्म बीच सब अपने पापों को हरलो ॥
यह धवल दुष्ट है अपराधी नहीं क्षमा योग्य इसको जानो ।
बस एक तुम्हारे कहने से मैं छोड़ रही हूं सच मानो ॥
फिर देवी बोली धवल सुनो अपराध नहीं ऐसा करना ।
बस इसी लिये छोड़ा तुझ को सतियों का लीना है शरना ॥
दोनों सतियों को दो माला दे गुण उन के बतलाये हैं ।
व्यभिचारी पास न आवेगा यह सबल भाव बतलाये हैं ॥
ऐसा विश्वास दिला करके सब निज निज धाम सिधाये हैं ।
उत्पात सभी उपशांत हुआ सतियों के मन हर्षाये हैं ॥
देवी जब अन्तर्धान हुई तो सुमति मित्र चल आया है ।
बोला हे सेठ! समझलो तुम यह सभी धर्म की माया है ॥

आगे परधन पर नारी पर अब कभी नहीं मन ललचाना।
सद्धर्म हृदय में धारण कर हे सेठ जगत में यश पाना॥

॥ दोहा ॥

सत्य वचन भगवान के झूठ नहीं लव लेश।
सत्य प्रेमियों के लिये है यह सत् उपदेश॥
सुमति कथन पर धवल ने दिया नहीं कुछ ध्यान।
वचन है जब नरक का कैसे कटे सुजान॥

॥ चौबोला ॥

कैसे कटे सुजान एक दिन पाप उदय फिर आया।
निकट आ गया सतियों के नहीं मन में कुछ शर्माया॥
भेप बनाया नारी जैसा समझ न कोई पाया।
देवी मालाओं ने निष्फल सारा यत्न बनाया॥

॥ दौड़ ॥

आज भी मुंहकी खाई हाथ कुछ बात न आई।
सेठ को चिन्ता भारी
व्यर्थ हुआ बदनाम कामना निष्फल हो गई सारी॥

॥ दोहा ॥

यत्न किये हैं सैंकड़ों गये सभी बेकार।
आखिर थक कर रह गया धवल सेठ मक्कार॥
रहता था जिस दीप में "श्री पाल" गुणवान।
धवल सेठ का मार्ग भी पड़ता वही सुजान॥

॥ राधेश्याम ॥

चलते चलते सब यान एक दिन कुंकुम पुर में आये हैं।
आ ठहरे नगर किनारे पर और लंगर सभी गिराये हैं॥
जल का कर देने धवल सेठ भूपाल सभा में आया है।
सोने की थाली रत्न भरी शुभ भेंट चढ़ाने लाया है॥
अति नम्र भाव चतुराई से राजा की भेंट चढ़ाई है।
जय विजय घोष के साथ खूब नृप की गुण गाथा गाई है॥
"श्री पाल" वहीं पर बैठा था झट धवलसेठपहचान लिया।
और धवल सेठ ने भी देखा यह "श्री पाल" है जान लिया॥
गड़ गया भूमि में लज्जा से मुंह तक भी खोल न पाया है।
गर्दन नीची कर बैठा रहा कुछ भी तो बोल न पाया है॥

॥ दोहा ॥

सेठ भेंट स्वीकार कर बोले झट भूपाल।
पान खिलाओ सेठकोउठकरअय "श्री पाल"॥
आज्ञा होने पर तभी उठे कुमर "श्री पाल"।
धवल सेठ को पान का बीड़ा दिया निकाल॥

॥ राधेश्याम ॥

जब दिया पान का बीड़ा तो "श्री पाल" ज़रा मुस्काया है।
हे धवल सेठ! आनंद तो है धीरे से वचन सुनाया है॥
ले लिया पान का बीड़ा तो गर्दन नीचे को झुकी रही।
कुछ शब्द नहीं मुख से निकला मन में किल्ली सी ठुकी रही॥

जब नृप की सभा समाप्त हुई नृप कुमर महल में आये हैं।
उस ओर धवल ने द्वारपाल से ऐसे वचन सुनाये हैं॥
जिस ने था मुझ को पान दिया यह पुरुष कहां से आया है।
कुंकुम पुर का ही वासी है या अन्य नगर से आया है॥
सुन प्रश्न द्वार रक्षक ने झट पिछली घटना बतलाई है।
सागर से तर कर आया था पर अब तो राज जमाई है॥
सुन धवल सेठ ने वापिस आ निज मित्रों को बुलवाया है।
बन गया जमाई! कुमर सुनो यह भेद खोल बतलाया है॥
सागर में गेर दिया था यह किस भांति यहां पर आया है।
अब रक्षा का कोई यत्न करो मेरा मन तो घबराया है॥

॥ दोहा ॥

सुमति मित्र बोला तभी सुन कर यह प्रस्ताव।
आज्ञा हो यदि सभी की कहूं मैं मन के भाव॥

॥ राधेश्याम ॥

मित्र मण्डली की आज्ञा से सुमति मित्र बतलाते हैं।
जा मिलो कुमर से विनय सहित यह सरल मार्ग समझाते हैं॥
लो क्षमा दान सब से उत्तम बस हम तो यही सुझाते हैं।
"श्री पाल" क्षमा करदेंगे झट हम यह विश्वास दिलाते हैं॥

॥ दोहा ॥

अगर सेठ ऐसा करें निश्चय मन में जान।
पहिले से भी अधिक हो हम सब का सम्मान॥

कुमति मित्र को छोड़ कर बोले सारे लोग ।
मित्र सुमति की यह दवा काटे सवका रोग ॥

॥ राधेश्याम ॥

एकान्त ले गया कुमति मित्र इस भांति उसे बहकाता है
झुकने से दुःख ही दुःख होगा यों उलटा मार्ग बतलाता है ।
जिस तरह कुमर यह मर जाये कुछ ऐसी युक्ति बनाओ तुम
बिन बांस बंसरी नहीं बनती बसयही न्याय अपनाओ तुम ।
इस भांति कुपथपर कुमति उसे समझा बहकाकर लाता था
सन्मुख डूमो का इक टोला परिवार साथ ले जाता था ॥
वह झुण्ड देखकर कुमति कहे लो सेठ काम बन आया है ।
कुछ बात कान में कह डूमो के मुखिया को बुलवाया है ॥
बोला हे डूम पुरुष देखो यदि मेरा काम बना दोगे ।
सारी कंगाली धो दूंगा मुंह मांगी लक्ष्मी पालोगे ॥
कुछ ऐसा कौतुक दिखलाओ कुछ ऐसा अद्भुत जाल रचो ।
"श्री पाल" डूम सुत बन जाये तुम ऐसी कोई चाल रचो ॥

॥ दोहा ॥

धवल सेठ की बात सुन बोला डूम प्रधान ।
बस इतनी सी बात का इतना तूल बयान ॥

॥ राधेश्याम ॥

यह बात ज़रा सी सेठ सुनो आनन फानन में करदूंगा ।
पर सौ मोहरें पहिले लूंगा सब कष्ट तुम्हारे हर दूंगा ॥

यदि है स्वीकार तो मोहरें दो मैं अपना काम दिखाता हूँ।
अचरज मानोगे "श्री पाल" को कैसे भाण्ड बनाता हूँ॥

॥ दोहा ॥

सेठ धवल ने शर्त यह स्वीकारी तत्काल।
सौ मोहरें निज कोष से दीनी तुरत निकाल॥
मोहरें देकर धवल ने सीख कही समझाय।
गुप्त भेद यह देखना प्रगट न होने पाय॥

॥ वीर छन्द ॥

मोहरें ले कर डूम सभी झट राज भवन में पहुँचे जाय।
पुण्यपाल की करी बड़ाई नाना विधि गुण उसके गाय॥
विजय आप की हो राजा जी बोले जय जय कार मनाय।
डूमों की यह बाणी सुन कर भूप हृदय में अति हर्षाय॥
"श्री पाल" के निज हाथों से मुखिया को फिर पान दिलाय।
पान दान हित राज कुमर जी पास डूम के चल कर आय॥
झटपट उठ कर मुखिया ने फिर "श्री पाल" को कण्ठ लगाय।
बोला उस से हे बेटा क्यों इतने दिन में दर्श दिखाय॥
देख दशा अपनी माता की हाय विरह में मरती जाय।
इतने ही में आई डूमनी रोती रोती कण्ठ लगाय॥
एक कहे मेरा भाई मिला है कोई बोला ताऊ बनाय।
कोई भानजा कोई जंवाई चाचा कह कर कोई बुलाय॥

कोई पति कोई जेठ बतावे कोई कहे बहनोई आय
कोई मित्र कोई साथी कहता लीना अपना जाल बिछाय।
लोग तमाशा देखें सारे बात समझ में कुछ नहीं आय
'श्री पाल''भी हाल देख यह बार बार मन में चकराय।
कोलाहल जब मचा सभा में भूपति बोला यों झुंझलाय
साफ साफ सब बात कहो अब हे डूमो तुम चुपकी लाय॥

॥ दोहा ॥

क्रोध भूप का देख कर चुप हो गये तत्काल।
कहे डूमड़ी भूप से सुनो हाल भूपाल॥
रहने वाले भूप हम सिन्धु नगर के जान।
निज पुत्रों को ढूंढते निकले यहाँ पर आन॥

॥ चौबोला ॥

निकले यहां पर आन भूपति भेद सभी बतलाऊँ।
गोवर्धन और "श्री पाल" का सारा हाल सुनाऊँ॥
लगते हैं दोनों क्या मेरे आगे सब दर्शाऊँ।
ध्यान लगा कर सुनना राजन् तनिक न भेद छुपाऊं॥

॥ दौड़ ॥

डूमनी हाल सुनावे भूपति ध्यान लगावे।
चकित सारे दरबारी
तुम भी सुनना ध्यान लगा कर जितने हो नर नारी॥

॥ राधेश्याम ॥

महाराज कहूँ क्या हाल तुम्हें दो पुत्र मेरे अपलक्षण थे।
गोवर्धन दूजा "श्री पाल" दोनों ही वड़े कुलक्षण थे॥
सव की इच्छा प्रभु पूर्ण करे पर पूत कपूत न हो पावे।
यह कष्ट वड़ा ही भारी है सुन सुन कर मन जलता जावे॥
चाहे दोनों अपलक्षण थे मेरी आंखों के तारे थे।
गोवर्धन और यह "श्री पाल" सारी दुनिया से प्यारे थे॥
गोवर्धन था कामी पूरा इस की पत्नि पर ललचाया।
इस को हथियाने के कारण विकाल जाल था फैलाया॥

॥ दोहा ॥

इसी विपय पर एक दिन झगड़ा हुआ महान्।
लड़ते लड़ते जा गिरे सागर के दरम्यान॥

॥ राधेश्याम ॥

सागर में गिर कर भी राजन् नहीं मन दोनों का शांत हुआ।
लड़ते लड़ते वहते जाते हम सव का मन अति भ्रांत हुआ॥
वहते वहते जव दूर गये परिवार का मन घवराया है।
कुछ देर प्रतीक्षा की वहां पर पर हाथ न कुछ भी आया है॥
आखिर निराश मन हो कर के वापिस अपने घर पर आये।
सव राय मिला कर आपस में अपनी नगरी से हैं धाये॥
अन्वेपण के काज आज हम तेरे पुर में आये हैं।
है धन्य भाग्य और धन्य घड़ी जो सुत के दर्शन पाये हैं॥

॥ दोहा ॥

धन्य भूप ! तेरी सभा मिले जहां सुत मात ।
इस की तड़पन ने हमें कलापाया दिन रात ॥

॥ राधेश्याम ॥

गोवर्धन का जो बिछुड़ना है वह भी जल्दी मिल जायेगा ।
जितना भी दुःख है हम सब पर अब सारा ही हिल जायेगा ॥
"श्री पाल" बता निज भाई का तुझ को कुछ पता ठिकाना है ।
किस जगह कहां है सुखी दुःखी पाया कुछ पता निशाना है ॥

॥ दोहा ॥

कर्मों की गति है बड़ी जगती में बलवान ।
इस से बचने के लिये जपो सदा भगवान ॥
क्रोधित हो "श्री पाल" से बोले नृप तत्काल ।
कौन वंश क्या जाति है सत्य कहो सब हाल ॥

॥ राधेश्याम ॥

बहु रूपी पन का "श्री पाल" अच्छा यह सांग निभाया है ।
नहीं फंसे जाल में अब तक हम पर तैंने खूब फंसाया है ॥
क्षत्रिय अपने को कह कर के हम को धोके में डाला है ।
भाँडों का बेटा हो कर के रच दिया पाप का जाला है ॥
सब सत्य सत्य परिचय कह दे तू किस माता का जाया है ।
क्या सच मुच है तू डूमों का या झूठी इन की माया है ॥

॥ दोहा ॥

सुना प्रश्न भूपाल का सोचे मन "श्री पाल"।
निश्चय मुझको हो गया आया इन का काल ॥

॥ राधेश्याम ॥

मन में उबाल सा आता है इन सब का ही संहार करूँ।
इन की माया को तोड़ धरूँ निज मनका हलका भार करूँ ॥
दृढ़ता से फिर "श्री पाल" कुमर राजा को वचन सुनाते हैं।
अब जाति पूछते जल पीकर क्यों उलटे पथ पर जाते हैं ॥
यदि वंश पूछना चाहो तो सैना ले रण में आ जाओ।
मैं जाति बता दूँगा अपनी राजन्! अब सज्जित हो आओ ॥
सब जांत पांत का झगड़ा यह मेरी तलवार मिटायेगी।
यश गाथा अपने विक्रम की दिल खोल तुम्हें बतलायेगी ॥
राजन्! तेरा कुछ दोष नहीं यह सब कर्मों की माया है।
हम तुम तो क्या सब जगती को कर्मों ने नाच नचाया है ॥

॥ दोहा ॥

नहीं क्षत्रिय नहीं विप्र हूँ समझ न वैश्य प्रसूत।
कान खोल सुन समझ ले मैं डूमों का पूत ॥
भूपति ऐसे वचन सुन क्रोधित हुआ अपार।
हम को धोखे में रखा दुष्ट महा मक्कार ॥

॥ राधेश्याम ॥

फिर तुरत भूप ने सुभटों को यह हुकम कठोर सुनाया है।
ले जा कर सूली पर धर दो सब को इस ने भरमाया है ॥

थे डूम डूमड़ी खड़े वहीं भूपति से यों अर्जी करते।
है इकलौता बेटा प्यारा क्यों इस का नृप जीवन हरते॥
जब से इसने है जन्म लिया यों ही दुःख पाता फिरता है!
समझाते हैं पर यों ही यह बस धक्के खाता फिरता है॥
डूमों के इन सब वचनों से नृप को निश्चय हो जाता है।
यह डूमों का ही जाया है सचमुच विश्वास जमाता है॥

॥ दोहा ॥

क्रोधित हो भूपाल ने हुकम दिया तत्काल।
सूली पर धर दो इसे आया इसका काल॥
मंत्री जी बोले तभी राजन्! करो विवेक।
सोच समझ से काम लो रखो वंश की टेक॥
नहीं डूम सुत कुमर जी निश्चय करो विचार।
बता रहे हैं स्पष्ट ही रूप, रंग, आकार॥
मंत्री जी! जब कुमर ही करता है स्वीकार।
फिर इस में सन्देह भी करना है बेकार॥

॥ राधेश्याम ॥

जब सभा विसर्जित हुई इधर भूपति महलों में आये हैं।
जल्लाद कुमर को पकड़ उधर नृप की आज्ञा से लाये हैं॥
यह सभी हाल जब डूमों ने जा धवल सेठ को बतलाया।
हर्षित हो मन में नाच उठा मानों लाखों का धन पाया॥

॥ दोहा ॥

मुंह मांगा फिर धन दिया डूमों को तत्काल ।
भर भर के सबको दिये धन्यवाद के थाल ॥

॥ राधेश्याम ॥

कर के धन माल डूम सब निज निज घर को आये हैं ।
स ओर सखी ने "गुण माला" को ऐसे वचन सुनाये हैं ॥
"गुण माला"! तेरे पति पर नृप ने आरोप लगाया है ।
ज को क्षत्रिय बतलाता था लेकिन डूमों का जाया है ॥
त लिये आज नृप ने उसको सूली का हुकम सुनाया है ।
ह बात सुनी दौड़ी जब ही और आकर तुम्हें बताया है ॥
छ यत्न करो हे राज सुता! मै बार बार समझाती हूँ ।
ज पति के प्राण बचालो तुम मैं तुम को यही सुझाती हूँ ॥

॥ दोहा ॥

दासी के सुन कर वचन घबराई "गुण माल" ।
विनय सुनाई पिता को आ कर के तत्काल ॥
सोच समझ से काम लो जिस से हो शुभ नाम ।
विना विचारे काम का होगा दुष्परिणाम ॥

॥ राधेश्याम ॥

जनक! इस तरह किसी कुमर का नाश नहीं करना चाहिये ।
र रही प्रार्थना हूँ तुम से इस ओर ध्यान धरना चाहिये ॥

"श्री पाल" कुमर डूमों से हैं यह किस ने तुम्हें बताया है।
धरणी पति हो कुछ सोच करो समझो इस में कुछ माया है॥
क्षत्रिय हैं राज कुमर सच्चे यह नन मेरा बतलाता है।
है अशुभ कर्म का जोर उन्हें जो ऐसे आन सताता है॥
यदि उन के प्राण लिये तुमने तो पीछे से पछताओगे।
मेरे भी प्राणों का लेखा बस पूरा होता पाओगे॥

॥ दोहा ॥

कन्या की सुन प्रार्थना, हुआ भूप हैरान।
बोला बेटी कुमर को, डूमों का ही जान॥

॥ चौबोला ॥

डूमों का ही जान नहीं इस में कुछ दोष हमारा।
करे कुमर स्वीकार स्वयं फिर चले भला क्या चारा॥
धोखे से निज ब्याह कराके कपट किया है भारा।
ठीक ठीक जो कोई परिचय ला कर देवे सारा॥

॥ दौड़ ॥

कुमर की मृत्यु टलेगी सत्य की बेल फलेगी।
चली तभी "गुण माला"
आई उस स्थान जहां पर बंद किये "श्री पाला"॥

॥ दोहा ॥

"श्री पाल" के पास आ करने लगी पुकार।
प्राण नाथ प्रभु आप की निंदा हुई अपार॥

चमत्कार यदि इस समय दिखलाओ कुछ आप ।
नृप को भी विश्वास हो मिटे सभी संताप ॥
"गुण माला" की बात सुन बोल उठे "श्री पाल" ।
चमत्कार दूं क्या प्रिये है कर्मों की चाल ॥

॥ राधेश्याम ॥

कर्मों की देखो चाल प्रिये जिस दिन से में जग में आया ।
सुख दिया बहुत से जीवों को पर मैंने तो दुःख ही पाया ॥
सागर के तट पर जाओ तुम इक यान वहां पर आया है ।
दो सतियां जिस में आई हैं कर्मों ने जिन्हें सताया है ॥
पहली श्री "मदन सुन्दरी" है जो बबर सुना कहलाई है ।
है अपर "रैन मंजूषा" जी जो क्षत्रिय कुल की जाई है ॥
दोनों से मेरा व्याह हुआ मैं उन का पति कहलाता हूँ ।
सब भेद मिलेगा उन से ही मैं तुम को बस समझाता हूँ ॥
मेरा परिचय जब पायेंगी झट पास तुम्हारे आयेंगी ।
जो गुप्त भेद है कर्मों का सब खोल तुम्हें बतलायेंगी ॥
प्रिय पति की ऐसी बाणी सुन झट "गुण माला" उठ धाई है ।
चलते चलते सब सभटों को यह आज्ञा तुरत सुनाई है ॥
मेरें आने तक प्रेम सहित रखना "इनको" सब आदर से ।
सुख का वर्ताव सभी करना सब अनुचर मेरे प्रियवर से ॥

॥ दोहा ॥

आज्ञा दे इस भांति से सुभटों को "गुण माल" ।
सागर के तट के निकट आ पहुँची तत्काल ॥

यान पास जा कुमर के कहने के अनुसार।
सम्बोधित कर नाम से करने लगी पुकार॥

* "गुण माला" की पुकार *

(तर्ज—मन विच मन मोहन ....)

हे "मदन" बहन झट आना देर न ज़रा लगावना।
संग "रैन मंजूषा" को भी लाना देर न ज़रा लगावना॥
कोटि भट पुण्यवान "श्री पाल" जी महान।
सागर को पार कर पहुँचे यहां पे आन॥
ज़रा भेद उसी का तुम बताना॥ १ ।

"श्री पाल" नाम सुन दोनों सती आई झट।
पति देव हैं सुखद बोली बाणी झट पट॥
किस तरह उन्हें तुम जाना।
देर न ज़रा लगावना॥ २॥

सागर को पार कर "श्री पाल" आये हैं।
सुनो इस जन्म के पति कहलाये हैं॥
पर जग में करम हैं महाना॥ ३॥

जनक सभा में डूम टोल कोई चल आया।
कर के कपट मेरा पति डूम ठहराया॥
डूम वचन पिता सच जाना॥ ४॥

डूम जान कुमर को पिता जी को क्रोध आया।

सुभटों को झटपट बुला के यों फर्माया ॥
सूली पर झट इस को चढ़ाना ॥ ५ ॥
प्रार्थना है आप से देओ मुझे पति दान ।
चल कर निज हाल भूप से करी बयान ॥
मिले "गौतम" खुशी का तब ठिकाना ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

"गुण माला" की बात सुन दोनों सतियां नार ।
उतर यान से झट चलीं आईं नृप दरबार ॥

॥ राधेश्याम ॥

दोनों सतियों ने भूपति को फिर सारा हाल सुनाया है ।
हैं प्राण नाथ"श्री पाल"कुमर सब भेद खोल बतलाया है ॥
जो बंश डूम इन का समझा संदेह व्यर्थ ही आया है ।
कहां तक बतलायें हे राजन्! यह कोटि भट कहलाया है ॥
कारण वशात् निज नगरी से पति देव हमारे धाये हैं ।
कई पुर पाटन तय करके फिर यह धवल सेठ संग आये हैं ॥
धन दौलत देख कुमर जी की यह धवल पाप में आया था ।
"श्री पाल"कुमर को सागरमेंरचकरछलचाल गिराया था ॥
हे भूप! कहां तक बतलायें यह नीच कुकर्मों पर आया ।
जब लगा छेड़ खानी करने देवी का मन भी कम्पाया ॥
आ करी मदद जब देवी ने तब धर्म हमारा बच पाया ।
अब यहां आन कर भी राजन्! फैलाई इस ने निजमाया ॥

हो पिता तुल्य भूपाल! आप इस लिये यहां पर आई हैं।
और आदि अन्त पर्यन्त तुम्हे सब बातें सत्य बताई हैं॥

॥ दोहा ॥

सतियों की सुन कर कथा पुण्यपाल भूपाल।
निश्चय मन में हो गया क्षत्रिय है "श्री पाल"॥

॥ चौबोला ॥

क्षत्रिय है "श्री पाल" भूप झट कारा गृह में आया।
निज हाथों से बंधन खोले विनय भाव दर्शाया॥
क्षमा करो अपराध कुमर मैं नहीं समझने पाया।
सत्य हाल अब ज्ञात हुआ है धवल सेठ की माया॥

॥ दौड़ ॥

सती ने बात बताई हृदय में शान्ति छाई।
दिया दुःख तुम को भारी
दण्ड कुमर जी इसका मुझ को दो इच्छा अनुसारी॥

॥ दोहा ॥

विनय वचन सुन कुमर ने जोड़े दोनों हाथ।
मैं बालक हूँ आप का आप हमारे नाथ॥
दोष नहीं कुछ आप का नहीं धवल का जान।
कर्मों का सब खेल है कर्म कथा बलवान॥

॥ चौपाई ॥

सोच यही है मन में भारा।
तनिक न तुम ने भूप विचारा॥

हे भूपति कुछ न्याय न कीना।
तुरत हुकम सूली का दीना॥
क्षत्रिय तेज नहीं पहचाना।
डूम पुत्र मुझ को झट माना॥
सोच समझ कर राज्य चलाओ।
विन सोचे मत कदम उठाओ॥

॥ दोहा ॥

राज्य धर्म की कुमर ने भांति भांति दी सीख।
उधर क्षमा की माँगता पुण्यपाल नृप भीख॥

॥ चौपाई ॥

प्रेमानन्द हृदय में आया।
सादर भूप महल में लाया॥
आदि अन्त अपराध क्षमाया।
सब सुभटों को हुकम सुनाया॥
नगरी के सब डूम बुलाओ।
धवल सेठ को बांध मंगाओ॥
झट पट सुभट डूम सब लाये।
नरपति ने फिर वचन सुनाये॥
अय दुष्टो क्या जाल बिछाया।
धोखे से सब को भरमाया॥

मृत्यु दण्ड अब सब को दीना।
अति अपराध यहां तुम कीना ॥

॥ दोहा ॥

भूपति के सुन कर वचन कांपे डूम महान।
हाथ जोड़ कर भूप से बोले खोल ज़बान ॥

॥ राधेश्याम ॥

हे दीन बन्धु कुछ विनय सुनो माना सब दोष हमारा है।
इस लोभ दुष्ट ने हम सब का सारा ही काम बिगारा है ॥
है रूप नगर का धवल सेठ जिस के कहने से काम किया।
नहीं कुमर हमारा कुछ लगता केवल लालच से काम किया ॥
"श्री पाल" कुमर को डूम बना मुंह मांगा उससे धन पाया।
हम सत्य बात बतलाते हैं यह धवल सेठ की है माया ॥
अब क्षमा करो हे प्रभो हमें कर दया क्षमा का दान करो।
हम खड़े हुये हैं चरणों में अब क्षमा सभी अज्ञान करो ॥

॥ दोहा ॥

डूम वचन सुन भूप मन छाया क्रोध अपार।
बांध जूड़ कर सेठ को मंगवाया उस बार ॥

॥ राधेश्याम ॥

सुभटों को फिर यह हुकम दिया इन सबको सूली पर धरदो।
ये दुष्ट बड़े ही पापी हैं अविलम्ब अंत इन का करदो ॥

है नीच कुकर्मी सेठ महा इस ने सतियों को कलपाया।
नगरी के कुत्तों से इसकी नुचवा डालो सारी काया॥

॥ दोहा ॥

सन्न हो गया सेठ सुन हृदय हुआ बेचैन।
हाथ पांव सब बंध रहे ऊपर उठे न नैन॥
खड़े खड़े यह दृश्य सब देख रहे "श्री पाल"।
दया हृदय में आ गई देख धवल का हाल॥

॥ चौबोला ॥

देख धवल का हाल कुमर ने नृप से अर्ज गुजारी।
जनक तुल्य भूपाल आप हो विनती सुनो हमारी॥
धर्म पिता माना है इस को क्षमा करो इस बारी।
धवल सेठ ने पाप किया है बेशक भूपनि भारी॥

॥ दौड़ ॥

विनय मेरी सुन लीजे! भूप! अब करुणा कीजे।
क्षमा सब को कर डालो
दया हृदय में धारण कर दुःख संकट सब के टालो॥

॥ दोहा ॥

"श्री पाल" के सुन वचन भूपति हो हैरान।
नही क्षमा के योग्य यह बोला खोल ज़बान॥

॥ राधेश्याम ॥

कितना ही दूध पिला दो तुम पर सर्प नहीं निज विष छोड़े!
हे पुत्र! धवल भी इसी तरह नहीं दुष्ट पने से मुख मोड़े॥

मृत्यु दण्ड अब सब को दीना।
अति अपराध यहां तुम कीना ॥

॥ दोहा ॥

भूपति के सुन कर वचन कांपे डूम महान।
हाथ जोड़ कर भूप से बोले खोल ज़बान ॥

॥ राधेश्याम ॥

हे दीन बन्धु कुछ विनय सुनो माना सब दोष हमारा है।
इस लोभ दुष्ट ने हम सब का सारा ही काम बिगारा है ॥
है रूप नगर का धवल सेठ जिस के कहने से काम किया।
नहीं कुमर हमारा कुछ लगता केवल लालच से काम किया ॥
"श्री पाल" कुमर को डूम बना मुंह मांगा उससे धन पाया।
हम सत्य बात बतलाते हैं यह धवल सेठ की है माया ॥
अब क्षमा करो हे प्रभो हमें कर दया क्षमा का दान करो।
हम खड़े हुये हैं चरणों में अब क्षमा सभी अज्ञान करो ॥

॥ दोहा ॥

डूम वचन सुन भूप मन छाया क्रोध अपार।
बांध जूड़ कर सेठ को मंगवाया उस वार ॥

॥ राधेश्याम ॥

सुभटों को फिर यह हुकम दिया इन सबको सूली पर धरदो।
ये दुष्ट बड़े ही पापी हैं अविलम्ब अंत इन का करदो ॥

है नीच कुकर्मी सेठ महा इस ने सतियों को कलपाया।
नगरी के कुत्तों से इसकी नुचवा डालो सारी काया॥

॥ दोहा ॥

सन्न हो गया सेठ सुन हृदय हुआ बेचैन।
हाथ पांव सब बंध रहे ऊपर उठें न नैन॥
खड़े खड़े यह दृश्य सब देख रहे "श्री पाल"।
दया हृदय में आ गई देख धवल का हाल॥

॥ चौबोला ॥

देख धवल का हाल कुमर ने नृप से अर्ज गुजारी।
जनक तुल्य भूपाल आप हो विनती सुनो हमारी॥
धर्म पिता माना है इस को क्षमा करो इस बारी।
धवल सेठ ने पाप किया है बेशक भूपति भारी॥

॥ दौड़ ॥

विनय मेरी सुन लीजे! भूप! अब करुणा कीजे।
क्षमा सब को कर डालो
दया हृदय में धारण कर दुःख संकट सब के टालो॥

॥ दोहा ॥

"श्री पाल" के सुन वचन भूपति हो हैरान।
नहीं क्षमा के योग्य यह बोला खोल जबान॥

॥ राधेश्याम ॥

कितना ही दूध पिला दो तुम पर सर्प नहीं निज विष छोड़े।
हे पुत्र! धवल भी इसी तरह नहीं दुष्ट पने से मुख मोड़े॥

मत दया करो इस के ऊपर हे कुमर! तुम्हें बतलाता हूँ।
नहीं अच्छा हो परिणाम अन्त में बार बार समझाता हूँ॥

॥ दोहा ॥

वाणी सुन "श्री पाल" ने आग्रह किया अपार।
एक बार फिर दो क्षमा करुणा दिल में धार॥

॥ चौबोला ॥

करुणा दिल में धार भूप ने फिर यह वचन सुनाया।
'श्री पाल" ! तेरे कारण निर्बंधन इसे बनाया॥
करके विनय कुमर ने सारा डूम टोल छुड़वाया।
सभा विसर्जित हुई कुमर का जनता ने गुण गाया॥

॥ दौड़ ॥

कुमर ने करी भलाई नगर में शोभा पाई।
खुशी हैं सब नर नारी
किन्तु धवल के पापी मन में दुःख ही दुःख है भारी॥

॥ दोहा ॥

उधर कुमर आनन्द से रहते महल मंझार।
तीनों नारी साथ में भोगें भोग अपार॥
धर्म क्रिया में प्रेम से रहते हैं तल्लीन।
दुःख हरते सब का सदा सन्मुख हो जो दीन॥

॥ राधेश्याम ॥

प्रातः सायं "श्री पाल" कुमर इक आसन स्वच्छ बिछा करके।
करते है सामायिक संध्या मुखपत्ति मुख पर ला करके ॥
नवकार जाप करते निश दिन और निज पापों को हरते है।
और भेद भाव से रहित कुमर जनता की सेवा करते हैं ॥
सारे पुर में यश छाया है सब नर नारी यश गाते हैं।
श्री पुण्यपाल भूपाल स्वयं सादर बर्ताव निभाते हैं ॥
इस तरह कुमर आनन्द सहित पिछली करनी का फ़ल पाता।
अब चलें ज़रा उस ओर धवल जो चिन्ता में मरता जाता ॥

॥ दोहा ॥

धवल सेठ निज यान में बैठा करे विचार।
काम बना कुछ भी नहीं अपयश हुआ अपार ॥

॥ राधेश्याम ॥

फिर धवल सेठ मन में सोचे मेरा तो सचमुच हाल वही।
गट्ठे गोबर मुक्के खाये पर सिर पर ऋण की चाल रही ॥
है "श्री पाल" तो ज्यों का त्यों पर मैं मूरख बदनाम हुआ।
अवसान कुमर का करने को सब यत्नों में नाकाम हुआ ॥

॥ दोहा ॥

इस प्रकार से सेठ जी करते सोच विचार।
अगर कुमर जीवित रहा फिर जीना बेकार ॥

—० कुण्डलिया ०—

फिर जीवन बेकार किस तरह मुख दिखलाऊँ।
किसी तरह अब तुरत कुमर का काम मुकाऊँ॥
माल लगे सब हाथ तभी आनन्द मनाऊँ।
करूँ पुनः कुछ यत्न भाग्य अपना अजमाऊँ॥

॥ दोहा ॥

जिस व्यक्ति पर छा रहा होनी चक्र महान।
गरदन कटवाये बिना रहे न वह इन्सान॥
मन में अपने सोचता बने किस तरह काम।
सांप छछुन्दर की तरह मुश्किल बनी तमाम॥

॥ राधेश्याम ॥

यों अंत सोच करते करते इक यत्न हृदय में आया है।
ले कर कृपाण अपने कर में वह अर्ध निशा में धाया है।
चहुँ ओर भयानक अन्धकार ने अपना राज्य जमाया है।
मेघों की गर्जन को सुन कर कुछ धवल सेठ घबराया है॥
जो दृश्य वहां पर छाया था वह लिखने में नहीं आ सकता।
ऐसी भय वाली रजनी में छोटा मोटा नहीं जा सकता॥
वह तिमिर चीरता धवल सेठ आगे को बढ़ता जाता था।
पर यह क्या सहसा ठहर गया कुछ नज़र सामने आता था॥

॥ दोहा ॥

उभय शक्तियां सामने देख हुआ हैरान।
श्वेत वस्त्र हैं जिन्हों के दोनों एक समान॥

॥ राधेश्याम ॥

आश्चर्य जनक दोनों भारी आगे को बढ़ती आती हैं।
लम्बाई में दस गज़ की थीं पर कुछ कुछ घटती जाती हैं॥
था तेज चपल चपला जैसा वह देख धवल मन घबराया।
आंखें दोनों झट बंद हुई गश खा कर धरती पर आया॥
आया जब होश उसे तत्क्षण तब भूत भूत चिल्लाया है।
इतने में शक्ति समूह चलता तेजी से सन्मुख आया है॥
घबराया देखा धवल सेठ तब एक शक्ति बतलाती है।
हे सेठ न भय खाओ हम से यों मीठे वचन सुनाती है॥
कुछ धैर्य धवल के मन आया जब मधुर वचन सुन पाये हैं।
अपना परिचय दो शीघ्र मुझे ऐसे निज वचन सुनाये हैं॥
उस धवल सेठ की वाणी सुन दोनों शक्ति समझाती हैं।
इस समय यहां पर क्यों आई हम भेद सभी बतलाती हैं॥

॥ दोहा ॥

हम कुल की हैं देवियां तेरे सेठ महान।
आई हैं हम आज बस देने तुझ को ज्ञान॥

॥ चौबोला ॥

देने तुझ को ज्ञान आज जो नीच भाव मन आया।
"श्री पाल" को मारण कारण तैंने कदम उठाया॥
बार बार समझावें तुझको अनुचित है सब माया।
इन कामों से किसी जीव ने कभी नहीं सुख पाया॥

॥ दौड़ ॥

हृदय में शिक्षा धारो पाप सब दूर निवारो।
धर्म का ले लो शरणा
अगर नहीं मानोगे कहना कष्ट पड़ेगा भरना॥

॥ दोहा ॥

देवी के सुन कर वचन बोला त्योरी तान।
धरम वरम की तुम यहां करो न खींचा तान॥

॥ राधेश्याम ॥

मरने का भय भी नहीं मुझे सब कष्ट सहन मैं करलूँगा।
इक बार काम बनना चाहिये सब कष्टों को सिर धरलूँगा॥
क्या इतना सा ही कारण था जिसने इतना कलपाया है।
क्या इसी लिये तुमने आ कर मुझको भय भीत बनाया है॥

॥ दोहा ॥

राय न मुझ को चाहिये करने दो निज काम।
रुक सकता हूँ मैं नहीं जाओ अपने धाम॥

॥ राधेश्याम ॥

देवी बोली नहीं दोष तेरा यह सब कर्मों की माया है।
हम जान चुकी हैं धवल शीश पर आज शनिश्चर छाया है॥
अब तुरत लौट जा यान बीच बस अन्त हमें समझाना है।
यदि चला गया पुर में हट कर तो वापिस तुझे न आना है॥

॥ दोहा ॥

इतना कह कर देवियां हो गईं अन्तर्धान।
सेठ न माना एक भी होनी है बलवान॥

—० हरि गीतिका ०—

मार्ग में अपशुकन है मंजार मूपक खा रही।
मानो धवल को आज ही बस मौत निगले जा रही॥
भय नहीं मन में ज़रा बढ़ता तिमिर में जा रहा।
और मूर्ख अपने हृदय में अत्यंत सुख है पा रहा॥
इस भांति फिरता घूमता नगरी के भीतर आ गया।
चोर जैसा काम भी कर्मों के वश हो भा गया॥

॥ दोहा ॥

चला महल की ओर फिर पापी दुष्ट महान।
घात करने की हृदय में लीनी पक्की ठान॥

॥ राधेश्याम ॥

न में विचार करते करते वह निकट महल के आ पहुँचा।
ानो दुनिया का जीव एक यमराज द्वार पर जा पहुँचा॥
हिले से ही था ज्ञान उसे जहां "श्री पाल" जी सोते थे।
ा सात मँजिला महल कुमर जिस में निज पुण्य विलोते थे॥
ट धवल सेठ ने गोह सहित रस्सी ऊपर को गेरी है।
ा चिमटी उच्च मंडेरे पर लग पाई तनिक न देरी है॥

अब खुशी खुशी वह धवल सेठ रस्सी पर चढ़ता जाता है
जा पहुँचा जब चौथी मंज़िल मन फूला नहीं समाता है
इतने ही में खाँसी ध्वनि सुन सब हाथ पैर झट फूल गये
रस्सी से फिसला पांव तुरत लाला जी आपा भूल गये
मस्तक में चक्कर सा आया धरणी पर इक दम आन पड़े
छाती में निज तलवार लगी जिसके कारण झट प्राण उड़े
हैं तड़प तड़प कर प्राण दिये और नरक सातमी वास किया
निज करणी का फल पाया है नीची गति में आवास किया।

॥ दोहा ॥

करणी का फल गया देखो पापी आज।
उधर पूर्व में होगये उदय सूर्य महाराज ॥

॥ राधेश्याम ॥

इतनी तेज़ी से निकले है मानो मन में उल्लास हुआ।
चल कर देखें जल्दी पुर में किस तरह दुष्ट का नाश हुआ॥
यहां देख रहे रवि नारायण उस ओर कुमर से जा करके।
सब हाल धवल का बतलाया भृत्यों ने अति समझा करके॥
विस्मय कारी वाणी सुनकर झट कुमर महल से आये हैं।
जहां गिरा पड़ा था धवल सेठ उस ओर सभी जन आये हैं॥
जब समाचार उस मृत्यु का जो भी नर नारी सुन पाया।
चपला की भांति दौड़ पड़ा मानो मेला सा है आया।

हो गये इकट्ठे लाखों नर बन गया वहां मेला भारी।
पा गया पाप का फल पापी यों कहते हैं सब नर नारी॥
राजा आदि सब आ पहुँचे जब खबर उन्होंने पाई है।
उस ओर धवल की देख दशा सब को ही करुणा आई है॥

॥ दोहा ॥

अब क्या हो सकता भला चल सकता क्या ज़ोर।
मरा न वापिस आयेगा छुटी हाथ से डोर॥
सुमति आदि सब मित्र भी चिंतित हुये अपार।
आखिर फिर "श्री पाल" जी बोले वचन उचार॥

॥ राधेश्याम ॥

ह मृतक कलेवर देर तलक अब नहीं हमें धरना चाहिये।
जा करके शवधाम इसे अब संस्कार करना चाहिये॥
त्पुरुषों का गुण एक यही अपकारी पर उपकार करें।
गने पर दुःख संकट सह कर जगती में धर्म प्रचार करें॥

॥ दोहा ॥

अर्थी अब "श्री पाल" ने करवाई तैय्यार।
चले उठा कर सुभट जन दीप रीति अनुसार॥

॥ राधेश्याम ॥

ाखों नर नारी साथ हुये जब अर्थी यान उठाया है।
ा बाल वृद्ध नर नारी ने मरघट तक जा पहुँचाया है॥

कोई बोला इस पापी ने कितना दुष्कर्म कमाया है
जगती का हल्का भार हुआ इक नर ने वचन सुनाया है
सब मित्रों को "श्री पाल" कुमर फिर ऐसे वचन सुनाते हैं
निज हाथों से दो दाग़ तुरत अपने मुख से फरमाते हैं
"श्री पाल" कुमर के कहने से मित्रों ने दाग़ लगाया है
फिर जनता का सारा समूह वापिस नगरी में आया है
धन माल धवल का "श्री पाल" तीनों मित्रों को देते हैं
लेकर के माल सुमति आदिक हार्दिक आशीषें देते हैं।
अब प्रेम सहित "श्री पाल" कुमर उस कुंकुम पुर में रहते हैं
आनन्द प्राप्त कर भांति भांति निज पुण्यधार में बहते हैं।
शुभ करणी के द्वारा अब सब निज पुण्य मार्ग में बढ़ो ज़रा
और ज्ञान मार्ग की सीढ़ी पर "मुनि गौतम" तुम भी चढ़ो ज़रा।

॥ दोहा ॥

एक दिवस "श्री पाल" जी वन क्रीड़ा के काज।
निकल पड़े झट महल से शूरवीर सरताज ॥

॥ चौबोला ॥

शूरवीर सरताज विपिन में एकाकी चल आया।
विपिन मध्य में जाकर देखा बबर सिंह वनराया ॥
निज पंजों से गैया मैया पकड़ कहीं से लाया।
जीवित है वह गाय अभी तक नहीं मारने पाया ॥

॥ दौड़ ॥

सिंह जब दांत लगावे गाय तब अति चिल्लावे।
कुमर झट दौड़ा आया
एक बाण से बबर सिंह को यम पुर में पहुँचाया॥

॥ दोहा ॥

जान बचा कर गाय की हर्षित हुये अपार।
निकट गांव में छोड़ दी मन में करुणा धार॥
वन क्रीड़ा से निमट कर आते थे "श्री पाल"।
पथ में देखें बहुत नर पड़े छावनी डाल॥

॥ राधेश्याम ॥

इतने लोगों को देख कुमर उन सब के पास सिधाते हैं।
आगे बढ़ कर इक चतुर पुरुष को ऐसे वचन सुनाते हैं॥
तुम कौन कहां से आये हो किस ओर सभी प्रस्थान करो।
उत्कण्ठा मन में सुनने की अपना सब हाल बयान करो॥
वाणी सुन कर वह नर बोला हम कुण्डल पुर से आये हैं।
भूपाल जहां पर मकर केतु हम बात अनोखी लाये हैं॥

॥ दोहा ॥

कोस यहां से चार सौ कुण्डल पुर इक ग्राम।
मकर केतु भूपाल के पटरानी अभिराम॥

॥ राधेश्याम ॥

शुभ नाम "महा तारा" जिसका जो पतिव्रता कहलाती है।
दो पुत्र सुता "विद्या देवी" सब को ही सुख पहुँचाती है॥

वह रूप रंग में ऐसी है- सुर सुता देख शर्माती है।
नारी की सर्व कलाओं में सब से चतुरा कहलाती है॥
सब साज बाज फीके पड़ते जब बीणा मधुर बजाती है।
बस इसी लिए सारी जगती"हां"उसको जीत न पाती है॥

॥ दोहा ॥

राज सुता ने हृदय में पूरी दृढ़ता धार।
करवाई यह घोषणा सब विधि सोच विचार॥

॥ राधेश्याम ॥

दुनिया का जो कोई भी नर वीणा में मुझे हरायेगा।
निश्चय समझो इस तन मन का भरतार वही कहलायेगा॥
जब सुनी घोषणा हम सब ने काशी से कुण्डल पुर आये।
जब हरा दिया उस कन्या ने अपना सा मुंह ले कर आये॥

॥ दोहा ॥

रात बिताने के लिये किया यहां विश्राम।
राय हमारी है कुमर तुम्हीं बनाओ काम॥
शुक्ल पक्ष की अष्टमी आती है प्रतिमास।
वही परीक्षा के लिये चुन रक्खी है खास॥

॥ राधेश्याम ॥

कितने ही राज कुमारों को कन्या ने नाचा दिखलाया।
नारी होकर पुरुषों में भी कितना ऊंचा दरजा पाया॥

झट झेंप गया उसके आगे जो वीणा ले सन्मुख आया।
तुम पुण्यवान हो विजय करो बस यही हमारे मन भाया॥
पँथी जन के जब वचन सुने आश्चर्य चकित "श्री पाल" हुए।
ऐसी क्या कला भला जिससे सब हार गये बेहाल हुए॥
है दूर बहुत ही कुण्डल पुर अब बोलो मैं बतलाऊँ क्या।
सब काम शीघ्र ही बन जाते पर अब तुम को समझाऊँ क्या॥
लेकिन फिर भी कुछ सोचूँगा कोई तो यत्न बनाऊँगा।
जीतूँगा राज सुता को मैं सब जगती में यश पाऊँगा॥

॥ दोहा ॥

इतना कह कर कुमर जी आये निज स्थान।
कुण्डल पुर में गमन की सोचें युक्ति महान्॥

॥ चौबोला ॥

सोचें युक्ति महान् अन्त नव पद का ध्यान लगाया।
विधि विधान से जाप किया तब विमलेश्वर सुर आया॥
सेवक हूँ नव पद का प्रभु मैं आकर वचन सुनाया।
याद किया किस कारण भगवन्! करूं काम बतलाया॥

॥ दौड़ ॥

हृदय में जो भी ध्याता जगत में दुःख नहीं पाता।
पुण्य की सारी माया
पुण्य उदय से आज कुमर के पास स्वयं सुर आया॥

॥ दोहा ॥

खड़ा सामने देवता जोड़े दोनों हाथ।
बोला यों "श्री पाल" से आज्ञा दो नर नाथ ॥
वचन देव के श्रवण कर "श्री पाल" गुणवान।
बोला अति ही प्रेम से ऐसा दो वरदान ॥

—० कुण्डलिया ०—

ऐसा दो वरदान तुरत कुण्डल पुर जाऊँ।
विद्या देवी से बढ़ वीणा मधुर बजाऊं ॥
सुर बोला भगवन् पूरा सब कर दिखलाऊं।
सब से पहिले चरण भेंट यह हार चढ़ाऊं ॥

॥ दोहा ॥

विस्मय कारी हार तव दीना तुरत निकाल।
सुनो ध्यान से गुणों को देव कहे तत्काल ॥

॥ राधेश्याम ॥

पहिला गुण इस में भारी है सब मनोकामना पूर्ण करे।
विषधर काटे का दुःख संकट क्षण के क्षण में सब चूर्ण करे ॥
दुनिया की सभी कलाओं को विन सीखे यही सिखा देगा।
जिस जगह जहां जाना चाहो क्षण भर में यह पहुँचा देगा ॥
इन चार गुणों से युक्त हार तव पुण्य योग से देता हूं।
जब याद करोगे आऊँगा अब मार्ग स्वर्ग का लेता हूँ

॥ दोहा ॥

इतना कह कर देव तो हो गया अन्तर्धान।
हार प्राप्त कर कुमर के छाई खुशी महान् ॥
पुण्य पाप का मेल ही है दुःख सुख की खान।
पुण्य योग से कुमर को मिला हार गुणवान ॥
सकल वस्तुओं से जगत आदि अन्त भरपूर।
भाग्य विना गौतम सुनो हों समीप भी दूर ॥

॥ चौबोला ॥

हों समीप भी दूर हार झट कुमर गले में पाया।
देख देख गुण और सुन्दरता फूला नहीं समाया ॥
हर्षित देख मदन देवी ने ऐसा वचन सुनाया।
आज तुम्हारा प्राणेश्वर ? क्यों मन इतना हर्षाया ॥

॥ दौड़ ॥

भेद सब खोल बताओ खुशी की बात सुनाओ।
कुमर जी भेद बतावें
कुण्डल पुर की नृप कन्या का हाल सभी समझावें ॥

॥ दोहा ॥

नृप कन्या की कला को जाकर देखूं आज।
सबको ही वश में करे उसका वीणा साज ॥

॥ राधेश्याम ॥

इस तरह कुमर ने तीनों ही महिलाओं को समझाया है।
जल्दी ही वापिस आऊँगा मीठे स्वर से बतलाया है ॥

तुमखुद हीचतुरसियानी हो फिर अधिक तुम्हें बतलाना क्या।
तल्लीन धरम में नितरहनाबस अधिक तुम्हें समझाना क्या ॥

॥ दोहा ॥

शिक्षा दे हित भाव से चले कुमर "श्री पाल"।
आ कर के दरबार में समझाये भूपाल ॥
आज्ञा सब से प्राप्त कर पुण्यवान सुकुमार।
शोभ रहा है कण्ठ में देवाधिष्ठित हार ॥

॥ वीर छन्द ॥

आते हीं नगरी से बाहिर मन में ऐसी इच्छा लाय।
जा पहुँचू कुण्डल पुर नगरी देर न अब कुछ होने पाय ॥
देवाधिष्ठित हार पास में उसने फौरन करी सहाय।
आंख झपकने समय मात्र में दीना कुण्डल पुर पहुँचाय ॥
अनुपम शोभा देखी पुर की कुमर हृदय में विस्मय लाय,
जैसे जैसे पुर में बढ़ता कन्या की चर्चा सुन पाय ॥
जगह जगह विज्ञापन देखे उन सब यह में लिखा उपाय,
जो कोई भी वीणा द्वारा राज सुता को देय हराय ॥
इन्द्र सुता सी नृप कन्या का राज कुमर वह पति कहलाय।
पढ़ कर ऐसे विज्ञापन को मन में अति आनन्द मनाय ॥
विकृत अपनी काया कीनी जल्दी कोई समझ न पाय।
ठुमक ठुमक कर नगर बीच में जल्दी जल्दी चलता जाय ॥

कूबड़ बने हुये उस नर को जो जन देखे हंसी उड़ाय।
देख देख कर निज माया को "श्री पाल" भी हंसता जाय॥
वाद्य गुरु जहां पर रहते हैं उसी ठौर पर पहुंचा आय।
कई कुमर बैठे पहिले से वाद्य गुरु वीणा सिखलाय॥

॥ दोहा ॥

वाद्य गुरु के पास जा बोला यों "श्री पाल"।
वीणा सिखलाओ मुझे गुरुवर दीन दयाल॥
अन्य कुमर बोले तभी आओ जी श्रीमान्।
नमस्कार है आप को पाया रूप महान्॥

॥ राधेश्याम ॥

कर रहे कुमर की हंसी सभी पर कुमर नहीं सकुचाते हैं।
गुरु के चरणों में शीश झुका सेवा में विनय सुनाते हैं॥
मैं मकर केतु की कन्या का उद्घोष महा सुन पाया हूँ।
निश्चय समझो उस के कारण ही बहुत दूर से आया हूँ॥
वीणा की सुन्दर कला मुझे गुरुदेव अगर सिखलाओगे।
तो राज सुता से ब्याह करूं तुम जगती में यश पाओगे॥
"श्री पाल" कुमर की वाणी सुन गुरुवर ने वीणा पकड़ाई।
झट तोड़ी तुम्बी तांत सभी और हंसी सभी से उड़वाई॥
अब से पहिले वह राज सुता तेरे से ब्याह करायेगी।
तू रूपवान है बहुत बड़ा इस लिये तुझे अपनायेगी॥

इस तरह कुमर से हंसी करें पर कुमर द्वेष नहीं लाते हैं।
सब हिल मिल कर प्रेम सहित पूरा इक मास बिताते हैं॥
जब दिवस परीक्षा का आया नृप ने मण्डप सजवाया है।
फिर देश देश से चल कर के नृप ओघ वहां पर आया है।
"श्रीपाल" कुमर भी आपहुंचे पर ड्योढ़ि परही रोक दिया
बे ढ़ंगा कुबड़ा हाल देख अन्दर जाने से टोक दिया।
पहरेदारों को भूषण दे फिर अपना काम बनाया है।
टेढ़े मेढ़े गिरते पड़ते मण्डप के अन्दर आया है॥
जितने भी भूपति बैठे थे सब ने ही हंसी उड़ाई है।
आओ आओ बैठो यहां पर क्या रूप अधिक सुखदाई है॥
इस तरह हंसी करते करते कोने में फिर बिठलाया है।
अब कन्या के आने का भी वह समय निकट झट आया है॥
भूपति की आज्ञा होने पर नृप कन्या मण्डप में आई।
वीणा सम्बंधी पुस्तक भी वह अपने हाथों में लाई॥

* मनुष्यजमारो *

माया फेरी तुरत कुमर ने असली रूप बनाया है।
अन्य भूप तो कुब्ज समझते ,,विद्या" के मन भाया है॥
यही बनेंगे प्राणेश्वर अब मन में निश्चय आया है।
लेन परीक्षा अन्य नृपों की वीणा वाद्य मंगाया है॥
बारी बारी राज कुमर सब अपनी कला दिखाते हैं।
अभिमानी बन कर के सारे वीणा वाद्य बजाते हैं॥

सूर्य देव के आगे जैसे तारे सब छिप जाते हैं ।
तैसे ही उस कन्या आगे झेंप सभी नर जाते हैं ॥
धीरे धीरे "विद्या देवी" पास कुमर के आती है ।
सुन्दर वादन सुनने के हित वीणा झट पकड़ाती है ॥
वीणा सुन कर "श्री पाल" की जनता सब चकराई है ।
पहिला ही स्वर ऐसा कीना नींद सभी को आई है ॥

॥ दोहा ॥

वीणा सुन कर कुमर की सोये सभी कुमार ।
आभूषण सब नृपों के लीने तुरत उतार ॥

॥ चौबोला ॥

लीने सभी उतार कुमर ने दूजा ग्राम बजाया ।
सोये हुये सभी कुमरों को जिस ने तुरत जगाया ॥
महा अचंभा माना सब ने सब के आनन्द छाया ।
हुई प्रतिज्ञा पूर्ण सुता की मन इच्छित वर पाया ॥

॥ दौड़ ॥

वर माला पहनाई सुता ने विनय सुनाई ।
चरण में शरणा देना
प्राणेश्वर बन कर के भगवन् अर्धांगिन कर लेना ॥

॥ दोहा ॥

कन्या का तन मन वचन हर्षित सभी प्रकार ।
मकर केतु भूपाल के छाया दुःख अपार ॥

॥ चौपाई ॥

भूपति मन में अति घबराया।
कन्या पर अब संकट आया॥
कैसी विकृत है सब काया।
जात पात का भेद न पाया॥
शंका युत जब भूप निहारा।
असली रूप कुमर ने धारा॥
देख अचम्भा सब ने पाया।
भूपति के मन आनन्द छाया॥
महा कोटि भट हैं "श्री पाला"।
देख भूप ने भाव सम्भाला॥
तुरत ब्याह कन्या का कीना।
कन्या दान मुदित हो दीना॥

॥ दोहा ॥

अपने अपने नगर को गये सभी सुकुमार।
रहें दम्पति प्रेम से अलग महल मंझार॥
सभी जगत में पुन्य का समझो खेल महान्।
पुण्य कमाने के लिये जपो वीर भगवान्॥

* पुण्य का खेल *

(तर्ज—बंदा वो बंदा कहलाये.......... ....)

आनन्द जग में वह पाये जो मुख से वीर वीर गाये।

जग में वह पुण्य कमाये जो मुख से वीर वीर गाये ॥

पुण्य जग में सभी सुख दिखावे ।
पुण्य द्वारा ही आनंद पावे, हां पुण्यद्वारा ही आनंद पावे ॥
जीवन सुखी हो विताये जो मुख ० ॥ १ ॥

राम ने जब अयोध्या को त्यागा ।
पुण्य अगड़ाई ले कर के जागा ॥ हां पुण्य ० ॥
फिर अयोध्या में आनन्द छाये ॥ २ ॥

कष्ट कितना "श्री पाल" पाया ।
पुण्य करनी ने फिर सुख दिखाया ॥ हां पुण्य ० ॥
पुण्य से जिन्दगी जगमगाये ॥ ३ ॥

पाप को त्याग दो पुण्य कर लो ।
धर्म करनी से भण्डार भर लो ॥ हाँ पुण्य ० ॥
राह "गौतम" सुखों की बताये ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

पुण्य पाप इस जगत में देते सुख दुःख आन ।
पुण्य करो सब प्रेम से पुण्य सुखों की खान ॥
पुण्य उदय है कुमर का पाई ऋद्धि महान ।
आगे की घटना ज़रा पढ़ो लगाकर ध्यान ॥
रहते हैं "श्री पाल" जी कुण्डल पुर मंझार ।
पूर्ण करे इच्छा सभी देवाधिष्ठित हार ॥

॥ चौपाई ॥

सिद्ध पुरुष इक चल कर आया ।
"श्री पाल" को वचन सुनाया ॥
सुनो कुमर तुम ध्यान लगा के ।
बात कहूँ मैं सब समझा के ॥
सहस्त्र कोस कञ्चन पुर भारी ।
वज्र सैन नृप है अधिकारी ॥
नारी सुखदा "कञ्चन माला" ।
पतिव्रता और रूप रसाला ॥

॥ दोहा ॥

चार पुत्र के बाद में कन्या जन्मी एक ।
त्रिलोक सुन्दरी नाम शुभ दीना भूपति टेक॥
व्याह योग्य कन्या हुई जाना जब भूपाल ।
स्वर्ग पुरी सा स्वयम्वर रचवाया तत्काल ॥

॥ राधेश्याम ॥

अब देश देश से राज कुमारों को नृप ने बुलवाया है ।
त्रिलोक सुंदरी के व्याह का संदेशा भी पहुँचाया है ॥
क्षत्रिय कुल के तुम नेता हो इस लिये तुम्हें जाना चाहिये ।
और इन्द्र सुता सम कन्याकोअबशीघ्र व्याह लाना चाहिये ॥

॥ दोहा ॥

इतना कहकर सिद्ध जी गये उडारी मार ।
इधर कुमर के हृदय में छाई खुशी अपार ॥

पत्नि और भूपाल की आज्ञा ली तत्काल।
हार शक्ति से कनक पुर आये झट "श्री पाल"॥

॥ राधेश्याम ॥

पहिले जैसा निज रूप बना नगरी में घुसते जाते हैं।
बेढ़ंगा सा वह कुब्ज देख पुर वासी हंसी उड़ाते हैं॥
"श्री पाल" कुमर भी हर्षित हो मण्डप के पास सिधाये हैं।
रोका जब पहरेदारों ने लालच दे अन्दर आये हैं॥

॥ दोहा ॥

पहुँचे मण्डप बीच में पूछें अन्य कुमार।
किस कारण आये यहां रूपवान सरदार॥

॥ राधेश्याम ॥

उत्तर में बोले राजकुमर जिस कारण तुम सब आये हो।
उस ही कारण मुझको समझो क्यों तुम मनमें भरमाये हो॥
सुन हंसी उड़ाई सब ही ने तुम रूपवान हो राजकुमर।
कन्या तुम को ही चाहेगी तुम पुण्यवान हो राजकुमर॥

॥ दोहा ॥

वचन तुम्हारे सिद्ध हों बोला कुब्ज कुमार।
बाहर से झटपट तभी आई इक झनकार॥

॥ राधेश्याम ॥

खामोश हुये भूपाल सभी छम छम करती कन्या आई।
और स्वर्ण थाल में सजी हुई हीरों की वर माला लाई॥

"श्री पाल"कुमर ने कन्याको निज चमत्कार दिखलाया है।
केवल कन्या ही समझ सके ऐसा निज रूप बनाया है॥
अति तेजस्वी जब रूप दिखा कन्या की तबीयत ललचाई।
सब भूपालों को छोड़ कुमर गल झटपट माला पहनाई॥
देखा जब भूपालों ने तो झट रोष वदन में छाया है।
तलवार म्यान से बाहिर कर कुबड़े को वचन सुनाया है॥

॥ दोहा ॥

कन्या चूकी इस समय सुनो कुब्ज महाराज।
गलती से तव कण्ठ में गेरी माला आज॥
राज हंस हम है सभी तू है काक समान।
इस माला को पहनना नहीं कुब्ज! आसान॥

॥ चौबोला ॥

नहीं कुब्ज! आसान कुमर ने सब को वचन सुनाया।
पर नारी पर तुम ललचाओ मन में पाप समाया॥
सही मार्ग पर कन्या है पर तुम ने धोखा खाया।
सोच समझ कर ही कन्या ने मुझे हार पहनाया॥

॥ दौड़ ॥

भूप सुन रोष भराया कुमर से युद्ध मचाया।
कुमर ने बल दिखलाया
भेड़ बकरियों के सम सब को पुर से दूर भगाया॥

॥ दोहा ॥

कुब्ज शक्ति लख कर हुआ मुदित वज्र भूपाल।
प्रगट हुये जब कुमर जी परणाई निज वाल ॥
सुख पूर्वक अब नगर में रहते हैं सुकुमार।
पुण्य कमाते प्रेम से गृही धर्म अनुसार ॥
भूप सभा में एक दिन बैठे थे "श्री पाल"।
इतने ही में दूत इक आ पहुँचा तत्काल ॥
विनय सहित उस दूत ने जोड़े दोनों हाथ।
मधुर वचन कहने लगा सुनिए हे नर नाथ ॥

॥ राधेश्याम ॥

इस भरत क्षेत्र में हे स्वामिन्! दलपत नगरी इक भारी है।
जहां पुण्यवान् और तेजस्वी नृप धरापाल अधिकारी है ॥
लक्ष्मी देवी राणी उसकी शृङ्गार सुन्दरी कन्या है।
मैं सत्य तुम्हें बतलाता हूँ जग में बस पूर्ण अनन्या है ॥
हैं पांच सखी उसकी प्यारी जिन का मैं नाम बताता हूँ।
रूपा, रम्भा, गौरा, दक्षा, दुर्गा, को बात सुनाता हूँ ॥
शृङ्गार सुन्दरी सखियों से इक दिन यों वचन सुनाती है।
हो गई विवाह के योग्य सभी ऐसे उन को समझाती है ॥
देखो! हम सब का पृथक् २ यदि कहीं व्याह हो जायेगा।
सब बिछुड़ जायेंगी इधर उधर मन वीर नहीं धर पायेगा ॥

अतः एव नियम से हम सबको इक मण्डप बनवाना चाहिये।
निज मात पिता की आज्ञा से उद् घोषण करवाना चाहिये॥
मण्डप में रखी समस्या को जो नर पूरा कर पायेगा।
निश्चय समझो वह राजकुमर हमसब सखियों को ब्याहेगा॥
सब सखी सहेली सुनो ज़रा यह जीवन भर का नाता है।
संयोग किसी को बुरा मिले वही जीवन में दुःख पाता है॥
इस लिये तुम्हें समझाती हूँ सब सोच काम करना चाहिये।
जीवन नैय्या में सोच समझ अपने पग को धरना चाहिये॥
यदि अलग अलग हम विवाह करेंतो अलग सभी हो जायेंगी।
किस ओर सखी जाये कोई फिर पता न कब मिल पायेंगी॥
यदि एक साथ सब ब्याह करें तो एक साथ रह जायेंगी।
सुख दुःख की बातें सब सखियां आपस में तब कह पायेंगी॥

॥ दोहा ॥

पांचों सखियों ने करी बात सभी स्वीकार।
सम्मति से मां बाप की मण्डप रचा विचार॥
नगर नगर में भूप ने भिजवाये संदेश।
बतलाने अब आप को भेजा मुझे नरेश॥

—० हरि गीतिका ०—

संदेश भूपति का प्रभो स्वीकार अब कर लीजिये।
दलपत नगर में पहुँच कर सेवा का अवसर दीजिये॥

प्रार्थना सुन दूत की कहने लगे "श्री पाल" जी।
आयेंगे हम भी नगर में ले स्वीकृति भूपाल की॥
दूत को कर के विदा सम्मति मिला भूपाल की।
दलपत नगर में आ गये उस हार से "श्री पाल" जी॥
आदर किया भूपाल ने मण्डप में जा बिठला दिया।
भृत्यों के द्वारा भूप ने कन्याओं को बुलवा लिया॥

॥ राधेश्याम ॥

कन्याओं को फिर धरापाल ऐसी आज्ञा फरमाते हैं।
अब रखो समस्या सोचसमझइस भांति समुद समझाते हैं॥
भूपति की आज्ञा होने पर नृप सुता प्रसंग चलाती है।
सब सखियों की सम्मति लेकर सबको यों प्रश्न सुनाती है।
पानी पर सुन्दर पलंग बिछा है सभी भांति विस्तृत भारी।
जिस के ऊपर सुख में रहते हैं जीव जाति सब नर नारी॥
चादर एक तनी है ऊपर मानों हीरों की क्यारी।
कर रहे सभी विश्राम अवस पर एक बात का दुःख भारी॥
है जिसे जानते नहीं जानते यह देखो अचरज भारी।
नहीं जानते को सब जाने कैसी ज्ञान दशा न्यारी॥
सिंह सामने जैसे बकरी क्षण क्षण सूखी जाती है।
बस उसी भांति सारी सृष्टि चिंताओं से दुःख पाती है॥
इस एक प्रश्न में उलझे हैं देखो ज्ञानी क्या अज्ञानी।
किन्तु आज तक नहीं किसी ने इसकी घुण्डी पहचानी॥

॥ दोहा ॥

जो देगा इस प्रश्न का उत्तर राजकुमार।
एक मात्र होगा वही हम सब का भरतार॥

॥ राधेश्याम ॥

सुन जटिल समस्या सारे जन भारी अचरज में आये हैं।
बन पड़ा न उत्तर कोई भी मन ही मन में शर्माये हैं॥
जब हार गये बारी बारी "श्री पाल" कुमर जी आये हैं।
इस जटिल समस्या के सारे शुभ भेद खोल दर्शाये हैं॥
पानी पर पृथ्वी ठहरी है बस यह पलंग सुखदाई है।
नभ की चादर सब से सुंदर जो तारक हीर सजाई है॥
हम सारे ही दुनिया वाले उस चारपाई पर रहते हैं।
मानो इस विस्तृत सृष्टि पर दुःख सुख सारे ही सहते हैं॥
हैं सभी जानते निश्चय ही इक दिवस हमें मरना होगा।
इस नाशवान् जगती तल से हां कूच अवस करना होगा॥
पर नहीं जानते कब होगा? किस दिन हमको मरना होगा।
इस गमन चक्र में हम सबको कब कितना दुःख भरना होगा॥
पर यह भी तो मालूम नहीं हम कहां यहां से जायेंगे।
इस उथल पुथल के चक्कर से कैसे छुटकारा पायेंगे॥
यह तो निश्चय हम सबको है हम जायेंगे हां जायेंगे।
लाखों ही यत्न बनालें पर इस जगह न रहने पायेंगे॥

इस भांति समस्या पूर्ण हुई तो सभी भूप झुंझलाये हैं।
नृप से मिल कर इस "श्री पाल" ने सारे जाल विछाये हैं॥
अव पुनः समस्या रक्खेंगी यें पृथक् पृथक् सखियां सारी।
यदि पूर्ण कर सका "श्री पाल" तो वुद्धिमान् समझें भारी॥

॥ दोहा ॥

सव भूपों के वचन सुन धरापाल भूपाल।
सव सखियों को इस तरह आज्ञा दी तत्काल॥
सुनो पुत्रियो ध्यान से शंकित हुआ समाज।
पृथक् पृथक् तुमसव जनी रखो समस्या आज॥
प्रथम सखी रूपा कहे सुनो सभी सुकुमार।
"इच्छित फलपात्रे" यही पूर्ण करो इस वार॥

॥ राधेश्याम ॥

फिर दूजा क्रम था रम्भा का उस ने यों गिरा उचारी है।
"नहीं और कहीं दृष्टी डारो" वस यही समस्या प्यारी है॥
कह चुकी सखी जव दोनों ही गौरी ने वचन सुनाया है।
"नहीं चाल" समस्या पूर्ण करो यों प्रेम सहित समझाया है॥
चौथी जानो "मिलता उतना" फिर सखी पांचवी वतलाती।
"दुनिया-सेवक है उस जन की" सव को ऐसे है जितलाती॥

सब से पीछे शृङ्गार सुन्दरी मीठे वचन सुनाती है।
लो करो समस्या पूर्ण सभी यों कह कर प्रश्न सुनाती है॥

॥ दोहा ॥

आत्म तत्व से पूर्ण यह सुनो समस्या सार।
पूर्ण करो हमको वरो "क्या पाया अधिकार"॥

॥ राधेश्याम ॥

यह छओं समस्याएँ सुन कर सब नृप अचरज में आये हैं।
सब भांति भांति से यत्न किये पर पूर्ण नहीं कर पाये हैं॥
जब अधिक समय तक मण्डप में नहीं पूर्ण कोई कर पाया है।
तो "श्री पाल" ने उठ कर के नृप को यों वचन सुनाया है॥

॥ दोहा ॥

आज्ञा हो यदि आपकी पूर्ण करूँ सब काज।
परिचय मेरी बुद्धि का देखो सब जन आज॥
हार गये सब भूप जब कर कर यत्न हज़ार।
बोले फिर "श्रीपाल" जी नृप आज्ञा अनुसार॥

॥ राधेश्याम ॥

जो भक्ति भाव से युत हो कर सच्चे ईश्वर के गुण गावे।
निश्चय समझो वह सत्यधनी दुनियाँमें "इच्छित फलपावे"॥
अरिहन्त देव निर्गन्थ गुरु और दया धर्म मन में धारो।
ये तीन रत्न हैं जगती में "नहीं और कहीं दृष्टि डारो"॥

॥ दोहा ॥

राणा हो या रङ्क हो खाता सब को काल ।
मृत्यु समय इसजीव की चले कोई"नहींचाल ॥

॥ राधेश्याम ॥

आशा तृष्णा में फंसा पुरुष यह यत्न करे चाहे जितना ।
पर लिखाभाग्य मेंजोकुछहै उस प्राणी को"मिलताउतना" ॥
जो देश धर्म की सेवा में वलि दे देता है तन धन की ।
सब महा पुरुष वतलाते हैं"दुनिया सेवक है उस जन की" ॥

॥ दोहा ॥

ऊंची पदवी पाय के किया न श्रेष्ठ विचार ।
निश्चय सेउसपुरुष ने"क्या पाया अधिकार" ॥
हुई समस्या पूर्ण सब खुशी हुये नर नार ।
विमलेश्वर सुर ने करी पुष्पों की बौछार ॥

॥ चौबोला ॥

पुष्पों की बौछार भूप ने झट पण्डित बुलवाया ।
शुभ मुहूर्त में कन्याओं का इक दम व्याह कराया ॥
पुर वासी सब अति हर्पित हैं घर घर मंगल छाया ।
रहें प्रेम से कुमर पुण्य की देखो सारी माया ॥

॥ दौड़ ॥

धर्म करते चित ला के शुद्ध निज हृदय बनाके ।
सभी को सुख पहुँचाते

दुखी दीन असहाय जनों के संकट सदा मिटाते ॥

॥ दोहा ॥

नगरी का जल वायु सब करता स्वास्थ्य प्रदान।
अतः कुमर जी अधिक दिन रहे वहां सुख मान॥

॥ राधेश्याम ॥

नृप धरापाल ने प्रेम सहित "श्री पाल" कुमर ठहराये हैं।
बहु भांति भांति की सुविधाऐं दे कर के कुमर रिझाये हैं॥
"श्री पाल" कुमर को राजा का बर्ताव बड़ा ही भाया है।
इस लिये मदन देवी आदिक सब को झट वहीं बुलाया है॥

॥ दोहा ॥

दलपत पुर में ही कुमर भोगें सुख उत्साह।
जगी एक दिन हृदय में इस प्रकार की चाह॥

॥ राधेश्याम ॥

हो गये दिवसअब बहुतमुझे वापिसाघर पर जाना चाहिये।
देवी समान निज माता के जाकर दर्शन पाना चाहिये॥
"मैना सुन्दरी" को वचन दिया उसकोभीपूर्णकरना चाहिये।
हो गये वर्ष द्वादश पूरे इस ओर ध्यान धरना चाहिये॥

॥ दोहा ॥

मात दर्श हित कमर जी हुये बड़े वेचैन।
"रैन मंजूषा" देख कर वोली ऐसे वैन॥

॥ राधेश्याम ॥

हे नाथ! आज व्याकुल क्यों हो सब साफ साफ़ बतला दीजे।
क्या आज भाव मन में आये दासी को भी जतला दीजे॥
सुन वाणी बोले राजकुमर हे प्रिये! तुम्हें सब बतलाऊँ।
जागा मन में इच्छा भारी अब माता के दर्शन पाऊँ॥
द्वादश वत्सर आठम के दिन हे प्रिये! लौट कर आऊँगा।
यह वचन दिया है "मैना" को बस पूरा कर सुख पाऊँगा॥
सुन "रैन मंजूषा" बोल उठी निज वाक्य पूर्ण करना चाहिये।
"मैना" से मिल कर जल्दी हीसबविरहकष्ट हरना चाहिये॥

॥ दोहा ॥

है परन्तु इक प्रार्थना सुनिये जीवन नाथ।
ले चलना हम सभी को सादर अपने साथ॥
"रैन मंजूषा" की सभीकर विनती स्वीकार।
आज्ञा ले भूपाल की हुये कुमर तय्यार॥

॥ चौबोला ॥

हुए कुमर तय्यार सैन्य परिवार सहित फिर धाया।
चक्रवर्ती सम सभी नृपों को वश में करता आया॥
धीरे धीरे कई दिवस में उज्जयनी में आया।
सैन्य अधिक थी इसी लिये वन में ही डेरा लाया॥

॥ दौड़ ॥

एक दिन पूर्व वचन से कुमर जी उत्सुकपन से।

स्नेह के घन उमड़ाये
गुप्त रूप से माता जी के घर पर चल कर आये ॥

–० हरि गीतिका ०–

वर्ष द्वादश सप्तमी की रात्रि को "श्री पाल" जी।
द्वार पर छिप कर खड़े सब देखते हैं हाल जी॥
घर में उधर सुत विरह का अति कष्ट माता सह रही।
अश्रु झरती आंख से "मैना" को ऐसे कह रही॥
वचन पूरा हो रहा है पुत्र पर आया नहीं।
हाय! कोई आज तक संदेश भी लाया नहीं॥
जब से गया "श्री पाल" है कोई पत्र तक डाला नहीं।
पुत्र बिन मेरे हृदय में कोई उजियाला नहीं॥
"मैना" भी अश्रुस्नात हो बोली हृदय धीरज धरो।
आ जायेंगे पतिदेव माता भय न किंचित् भी करो॥
हे मात! रोना देख कर मुझ से रहा जाता नहीं।
जो कष्ट मेरे मन में है तुझ से कहा जाता नहीं॥
वर्ष द्वादश अष्टमी का वचन भी मुझ को दिया।
सप्तमी तिथि देख कर अब डबडबाता है जिया॥
शेष दिन है एक बस माता जी निश्चय जान लो।
सब पूर्ण होगी कामना निज धर्म से यह मान लो॥

॥ दोहा ॥

दृश्य देख कर कुमर ने पाया अति संताप।
गंगा जमुना वह चली सुन कर विरहा ताप ॥
रह न सके क्षण भर खड़े द्वारे पर नरनाथ।
माता जी के चरण झट आन झुकाया माथ ॥

॥ चौवोला ॥

आन झुकाया माथ कुमर ने नयनों नीर वहाया।
वार वार है क्षमा मांगता विनय भाव मन लाया ॥
पुत्र जान कर माता ने भी हृदय तुरत लगाया।
देख अचानक राजकुमर को वड़ा अचम्भा पाया ॥

॥ दौड़ ॥

चरण से पुत्र उठाया हृदय से अपने लाया।
प्रेम से माथा चूमें
हो कर के पगली सी माता प्रेम भाव में झूमें ॥

॥ दोहा ॥

पास खड़ी "मैना" सती निज पति को पहचान।
पिक सी कूकी एक दम गिरी चरण में आन ॥
गई माता निज महल में मिटा सकल संताप।
केवल "मैना" और कुमर करें प्रेम आलाप ॥

॥ चौवोला ॥

करें प्रेम आलाप कुमर से ऐसा वचन सुनाया।
हे प्राणेश्वर ! इस प्रकार क्यों दासी को विसराया ॥

नहीं खबर दी अब तक भगवन् क्या कसूर बन पाया।
"श्री पाल" ने चरणों से "मैना" को तुरत उठाया ॥

॥ दौड़ ॥

कण्ठ से तुरत लगाया प्रेम से वचन सुनाया।
सभी निज हाल बताया
परदेशों के सुख दुःखों को खोल खोल दर्शाया ॥

॥ दोहा ॥

पति दर्शन पा कर हुई हर्षित सती महान्।
जिस प्रकार से भक्त को मिले आन भगवान् ॥

* पति दर्शन से "मैना" की प्रसन्नता *

(तर्ज—आजादी को लिया है तुमने ....)

खुशी हुई "मैना" पति पाके यह तो बताओ कैसे ?
भक्त प्रभु के दर्शन से ज्यों मैंने कहा कि ऐसे ॥ टेक।
"मैना" की सब प्यास बुझी है यह तो बताओ कैसे ?
स्वाति बूंद से चातक की ज्यों मैंने कहा कि ऐसे ॥
आया देख कुमर को "मैना" खुश हो आई कैसे ?
वसंत के आने से पिक ज्यों मैंने कहा कि ऐसे ॥
कुमर वचन सुन खुशी हुई है यह तो बताओ कैसे ?
मेघ गर्ज से मोर खुशी हो मैंने कहा कि ऐसे ॥
"श्री पाल" को चाहे "मैना" यह तो बताओ कैसे ?
ज्यों चकोर चांद को चाहे मैंने कहा कि ऐसे ॥

॥ दोहा ॥

वर्षा से अषाढ़ की बागड़ खुशी मनाय ।
मैना की उस खुशी का वर्णन किया न जाय ॥

॥ राधेश्याम ॥

अब बहुत समय तक दम्पति ने आपस में प्रेमालाप किया ।
इस प्रेम मिलन से दोनों ने आनंदित अपना आप किया ॥
जब अधिक समय हो आयातो "श्री पाल" कुमरने फर्माया ।
हे प्रिये! चलो अबशीघ्र चलें पिछलों का सिमरन हो आया ॥
माता जी को संग ले करके अब शीघ्र हमें चलना चाहिये ।
जो बहिनें और तुम्हारी हैं उन से भी जा मिलना चाहिये ॥

॥ दोहा ॥

ऐसा निश्चय कर कुमर हुये तुरत तैय्यार ।
माता जी को साथ ले चले प्रसन्न अपार ॥

॥ राधेश्याम ॥

"मैना, माता, श्री पाल" कुमर तीनों तम्बू में आये हैं ।
सब महिलाओं ने "सासु" और "मैना" को शीश झुकाये हैं ॥
अति प्रेम सहित माता ने भी सब का सम्मान बढ़ाया है ।
"मैना" ने भी निज बहिन समझ सबको निज गलेलगाया है ॥
सिंहासन पर सम्मान सहित माता जी को बिठलाया है ।
चरणों में बैठे स्वयं कुमर मन फूला नहीं समाया है ॥

प्रिय प्रेम कथा कहते कहते सारी ही रात बिताई है।
"श्री पाल" कुमर ने प्रातः फिर "मैना" को बात बताई है॥
हे प्रिये! जनक तेरे को अब यहां पर ही बुलवाना चाहिये।
और निजागमन का संदेशा उन सब को भिजवाना चाहिये॥
"मैना" की ले कर राय तुरत फिर एक दूत भिजवाया है।
आ गये कुमर नगरी बाहिर यह संदेशा कहलवाया है॥

॥ दोहा ॥

आज्ञा लेकर दूत झट आया नृप के पास।
कर प्रणाम नम्र भाव से कही सूचना खास॥

॥ चौबोला ॥

कही सूचना खास भूप को सारा हाल सुनाया।
उज्जयनी के बाहर कुमर ने आ कर डेरा लाया॥
शीघ्र चलो भूपाल! आप को अभी अभी बुलवाया।
सुनी दूत की बात भूप मन फूला नहीं समाया॥

॥ दौड़ ॥

भूप ने हुक्म सुनाया सैन्य को तुरत सजाया।
चली चतुरंगी सैना
तम्बू में जा पहुँचे बैठे "श्री पाल" और "मैना"॥

॥ दोहा ॥

पुण्य पाल भूपाल का कर स्वागत सत्कार।
सिंहासन पर प्रेम से बिठा लिये साभार॥

॥ चौबोला ॥

विठा लिये साभार कुमर को अपने हृदय लगाया।
प्रेम सहित मीठी वाणी से ऐसे वचन सुनाया॥
बहुत दिवस के बाद कुमर जी आज दर्श दिखलाया।
क्या कारण अब तक कोई संदेश नहीं भिजवाया॥

॥ दौड़ ॥

कुमर भी प्रेम दिखावे सभी निज हाल सुनावे।
सभी में आनन्द छाया
राजा रुढ़ कर भूप कुमर को राज सभा में लाया॥

॥ दोहा ॥

सब उज्जयनी नगर में छाई खुशी अपार।
घर घर घी दीपक जले घर घर मंगलाचार॥
लगा हुआ दरबार है बैठा सब परिवार।
नाटक करने की कुमर आज्ञा दी उस बार॥

॥ राधेश्याम ॥

बैठे थे नाटक कार वहीं आज्ञा पाते ही उठ आये।
नहीं मूल नायिका उठती है यह देख सभी विस्मय लाये॥
जब अतिशय उस को समझाया तो फिर वह उठ करके आई।
नहीं नाटक किया किन्तु उसने ऊंचे स्वर से इक ध्वनि लाई॥
यह कर्म गति बलवान महा सुनना जितने हो नर नारी।
इन पुण्यपाल महाराया के दो कन्या थीं सब से प्यारी॥

जिस को राजा ने प्रेम सहित अच्छे वर से परणाया है।
वह नटी बनी अब सुर सुन्दरी यह कर्म गति की माया है॥

॥ दोहा ॥

विस्मित हो गये सभी जन सुन कर ऐसे वैन।
"सौभाग्य सुन्दरी" ने कहा गीले करके नैन॥
किस प्रकार कन्या मेरी नटी बनी है आज।
इस घटना के तुरत ही खोलो सारे राज॥

॥ राधेश्याम ॥

सुन करके बाणी राणी की वह नटी तुरत बतलाती है।
जब शंख पुरे दम्पति पहुँचे यहां से यों भेद सुनाती है॥
कुछ समय नगर के बाहिर ही हमने अपना डेरा लाया।
सुभटों को अपनी आज्ञा से नगरी के भीतर पहुँचाया॥
इस ओर तस्करों का टोला दलबल ले कर के आया है।
धन सहित उठाया मुझे और मेरे पति से विछुड़ाया है॥
इक सेठ पास मुझ को वेचा नैपाल देश में आ कर के।
उसने इक नट को जा वेचा उस ववर कोट में जा कर के॥
कुछ दिवसोंतक मैं वहीं रही नटवी का काम सिखलाया है।
जब सीख गई अच्छी प्रकार भूपति को आ दिखलाया है॥
हो कर प्रसन्न उस नटवर से भूपति ने मुझको मोल लिया।
फिर "मदनसुन्दरी" के व्याह में "श्री पाल" कुमरको भेंट किया॥

"श्री पाल" कुमर के साथ साथ मैंने बहु काल विताया है।
परिवार देख कर आज मुझे कुछ मोह उदय हो आया है ॥

॥ दोहा ॥

"मैंना" ने सद्धर्म का फल पाया सुखकार।
गर्व किया मैंने महा भोगा कष्ट अपार ॥
करम चाल सुनकर सभी विस्मित हुये अपार।
तुरत कुमर ने प्रेम से वाणी कही उचार ॥

॥ राधेश्याम ॥

अज्ञात आज तक बात रही इस लिये न कुछ कर पाया मैं।
अपराध क्षमा करना मेरा कर बद्ध आज हो आया मैं ॥
सम्मान सुन्दरी का करके अपना कर्तव्य निभाया है।
फिर शंख पुरे से उसी समय उस के पति को बुलवाया है ॥

॥ दोहा ॥

शंख पुरे को जीत कर दिया सभी अधिकार।
दम्पति का दुःख टल गया छाई खुशी अपार ॥
रहें कुमर आनंद से नहीं कष्ट का काम।
तन मन से सब प्रजा को पहुँचाते आराम ॥

॥ राधेश्याम ॥

बचपन में जिन के साथ रहे वे पुरुष सात सौ बुलवाये।
सैना पति को देकर पदवी सब के ही मानस हर्षाये ॥

पहिले प्रधान मति सागर का सुत राज प्रधान बनाया है
"श्री पाल"कुमर को मंत्री ने इस भांति भेद बतलाया है।

॥ दोहा ॥

परम यशस्वी भूपवर! कीर्तिमान महाराज।
चम्पा पुर का शत्रु ने ले रक्खा है राज॥
प्रबल पुण्य है आप का सैन्य अधिक है पास।
चम्पा का अब राज्य लो पूर्ण करो विश्वास॥
मंत्री वचनों से कुमर उत्साहित हो खास।
दूत एक भेजा तुरत वीरदमन के पास॥

॥ चौबोला ॥

वीरदमन के पास दूत ने सारा हाल सुनाया।
कई राजों को जीत कुमर जी उज्जयनी में आया॥
चम्पा नगरी का स्वामी है "श्री पाल" महाराया।
ज़ोर चले नहीं अब कुछ तेरा त्याग क्रोध और माया॥

॥ दौड़ ॥

मान की बातें छोड़ो न्याय से मन को जोड़ो।
हृदय का दोप मिटालो
चम्पा पुर का राज्य कुमर को देकर के यश पालो॥

॥ दोहा ॥

दूत वचन से भूप मन क्रुद्ध हुआ तत्काल।
अर्ध चन्द्र धक्का दिया हो करके विकाल॥

॥ राधेश्याम ॥

नहीं राज्य इस तरह मिलता है उस कोढ़ी को जा समझाना।
गीदड़ भभकी के वचन सुना बस किसी और को वहकाना॥
नहीं दूतों से यों काम वने युद्धस्थल में होंगी वातें।
मैं सैना ले कर आता हूँ गिनते रहना अपनी रातें॥

॥ दोहा ॥

दूत क्रुद्ध होकर तभी लौट पड़ा तत्काल।
आ करके "श्री पाल" को सुना दिया सब हाल॥

॥ राधेश्याम ॥

चाचा की वाणी सुन कर के अति रोप वदन में छाया है।
ले सैन्य प्रवल तत्काल कुमर चंपा नगरी को धाया है॥
युद्धस्थल में "श्री पाल" कुमर ने निज सैना ठहराई है।
फिर वीरदमन की सैना भी दल वल ले कर के आई है॥

॥ दोहा ॥

प्रथम भूप को कुमर ने समझाया हित मान।
वीरदमन माना नहीं हुआ युद्ध घमसान॥

॥ राधेश्याम ॥

अव युद्ध परस्पर हुआ वड़ा इक प्रलय काल सा आया है।
लाशों से धरती पटी पड़ी नभ में तीरों की साया है॥
चहुँ ओर रक्त ही रक्त हुआ नर मुण्ड धड़ाधड़ गिरते हैं।
हो रहा काल का नग्न नृत्य जिनका आई वो मरते हैं॥
कुछ देर युद्ध होने पर ही रिपु का हृदय घवराया है।
झट वीरदमन को वाँध लिया औरकुमरनिकट पहुंचाया है॥

॥ दोहा ॥

विजय हुई "श्री पाल" की छाई खुशी महान ।
विमलेश्वर ने व्योम से पुष्प गिराये आन ॥

॥ राधेश्याम ॥

अपना ही चाचा जान कुमर ने वीरदमन को मुक्त किया,
फिर मीठे वचनों से उसको समझाने से उपयुक्त किया ॥
बिन सोचे तुमने काम किया लाखों की हत्या कर डाली ।
यदि दूत बचन पर चलते तो हो जाती सब की रखवाली ॥

॥ दोहा ॥

शीश झुका सुनता रहा वीरदमन बलवान ।
तुच्छ राज्य के हेतु यह हुआ महा घमसान ॥
धिक् ऐसे संसार को और मुझे धिक्कार ।
जिन दीक्षा के बिना अब नहीं होगा उद्धार ॥

॥ राधेश्याम ॥

युद्धस्थल में ही वीरदमन केशों का लुञ्चन करते हैं ।
और शुद्ध भाव से प्रेम सहित मुनि भावों से मन भरते हैं ॥
हो गये साधु अब वीरदमन चहुँ ओर जगत में यश छाया ।
"श्री पाल" कुमरने प्रेम सहित चरणों मेंनिजमस्तक लाया ॥
श्री वीरदमन है धन्य तुम्हें जो इस प्रकार कर दिखलाया ।
इक दम छोड़ा संसार सभी नहीं मोह ज़रा मन में आया ॥

"श्री पाल" कुमर इस भांति इधर मुनिवर की महिमा गाते हैं।
उस ओर तपस्या हित मुनिवर जङ्गल की ओर सिधाते हैं॥

॥ दोहा ॥

हाथी पर "श्री पाल" जी हो कर के असवार।
चम्पा नगरी को चले करते जय जय कार॥

॥ राधेश्याम ॥

चम्पा में जिस दम पहुँचे हैं सारी जनता उमड़ाई है।
पुष्पों की वर्षा कर कर के सम्पूर्ण प्रजा हर्षाई है॥
यों प्रेम सहित "श्री पाल" कुमर अब राज सभा में आये हैं।
राजे महाराजे विनय सहित चरणों में शीश झुकाये हैं॥

॥ दोहा ॥

सिंहासन निज पिता का ले कर कुमर महान।
चम्पा का राजा बना वरताई निज आन॥

—० हरि गीतिका ०—

सब नारियों को कुमर ने उज्जैन से बुलवा लिया।
भुजबल से लूँगा राज्य अपना सबको कर दिखला दिया॥
घर घर में मंगल छा गया कई दान घर बनवाये हैं।
कर माफ सारे कर दिये जन मन सभी हर्षाये हैं॥
चहुँ ओर आनन्द छा गया नर नारि सब सुख पा रहे।
इन्सान की तो बात क्या पशु पक्षी तक गुण गा रहे॥

॥ दोहा ॥

इस प्रकार चम्पा पुरी बनी स्वर्ग गुणखान ।
न्याय नीति से कुमर जी चला रहे निज ग्रान ॥
इधर कुमर अति प्रेम से करते अपना राज ।
उधर तपस्या में लगे वीरदमन महाराज ॥
"वीरदमन" मुनि को हुआ निर्मल अवधि ज्ञान ।
विचरण करते आ गये चम्पा पुर दरम्यान ॥

॥ चौबोला ॥

चम्पा पुर दरम्यान सभी जन जन का मन हर्षाया ।
"श्री पाल" परिवार सहित मुनि दर्शन के हित आया ॥
दुर्लभ पाया मानव का तन मुनिवर ने फर्माया ।
तजो पराई निंदा चुगली सव को ही समझाया ॥

॥ दौड़ ॥

विषय के भाव मिटाओ क्रोध को दूर भगाओ ।
धर्म कर पुण्य कमालो
प्रातः सायं धर्म कर्म का कुछ तो समय निकालो ॥

॥ दोहा ॥

सुन मुनि के व्याख्यान को मुदित हुये नर नार ।
एक कण्ठ से सभी ने बोली जय जय कार ॥
उसी समय "श्री पाल" ने विनय भाव अनुसार ।
मुनि चरणों में भक्ति से किया प्रश्न सुखकार ॥

॥ राधेश्याम ॥

गुरु देव! मुझे किन कर्मों ने इस भव में आन सताया है ।
क्या पाप बना मुझ से कोई जिस ने यह रंग दिखाया है ॥
क्यों हुआ कुष्ट? क्यों गिरा सिंधु? सब भेद खोलकर बतलाओ ।
किस कारण फिर आनन्द मिला हे भगवन्! यह भी समझाओ ॥

॥ दोहा ॥

आशय सुन "श्री पाल" का यों बोले मुनिराय ।
कर्म चक्र की सब कथा सुनो भूप! मन लाय ॥

॥ चौपाई ॥

हस्ति नाग पुर नगर सुहाना ।
नील कण्ठ नृप सब जग जाना ॥
सभी भांति नृप गुण भण्डारी ।
किन्तु एक अब गुण था भारी ॥
हुये पाप वश भूप शिकारी ।
जीव घात की परिणति धारी ॥
भांति भांति सब ने समझाया ।
किन्तु भूप मन एक न लाया ॥

॥ दोहा ॥

एक दिवस नृप सात सौ पुरुषों को ले लार ।
घोर विपिन में आ गये खेलन हेतु शिकार ॥

उस जंगल में भूप ने देखे इक मुनि राय।
किया निरादर सभी ने कुष्टी उन्हें बताय॥

॥ राधेश्याम ॥

मुनिराज ध्यान में अटल रहे नहीं रोष हृदय में लाये हैं।
पर उस अभिमानी राजा ने मुनि पानी बीच गिराये हैं॥
जब लगे डूबने मुनिवर तो नृप मन में कुछ करुणा लाया।
झट पकड़ निकाले उसी समय फिर वापिस नगरीमें आया॥
मुनिराज एक दिन भिक्षा को नृप के महलों में आये हैं।
लख भूपति का मन भड़क उठा सौ सौ अपशब्द सुनाये हैं॥
दे दिया मृत्यु का दण्ड उन्हेंनहीं किंचित् भी भय खाया है।
पति का यह पाप लखा जिसदमराणी का मन भर आया है॥
देदे कर शिक्षा करड़ी सी नृप का अज्ञान मिटाया है।
अब भूप सभी कुछ समझ गया अपनेमन को समझाया है॥
मुनि चरणों में आ गिरा स्वयं भयभीत हृदय अकुलाया है।
अति नम्र भावसे प्रेम सहित मुनिकोयों वचन सुनाया है॥

॥ दोहा ॥

गुरुवर मुझ से हो गया महा पाप यह आज।
करूँ यत्न अब कौनसा? बचे किस तरह लाज॥

॥ राधेश्याम ॥

भूपति के ऐसे वचन सुने तब मुनि जी यों बतलाते हैं।
जो महा मंत्र का जाप करे सब पाप तुरत छुट जाते हैं॥

मुनिराज सभीविधि समझा कर जंगल की ओर सिधाये हैं।
इस ओर भूप ने राणी ने जप में निज भाव लगाये हैं॥
दोनोंने अति उत्साह सहित फिर नमस्कार का जाप किया।
पापों का हल्का बोझ किया उपशांत कर्म संताप किया॥
उन सभी सात सौ सुभटों ने इस जप का अति गुण गाया है।
मानो अनुमोदन करके ही सुख कारी पुण्य कमाया हैं॥
अन्तिम आयु में दम्पति ने तप संयम ध्यान लगाया है।
और सभी सात सौ सुभटों ने शुभ श्रावक धर्म निभाया है॥
फिर आयु पूर्णकर अपंअपनी निजनिज गति में सब धाये है।
संयोग मिला देखो कैसा अब भरत क्षेत्र में आये हैं॥
निज आयु पूर्ण कर नील कण्ठ तुम "श्री पाल" कहलाये हो।
उस पतिव्रता पिछली राणी इस "मैना" के मन भाये हो॥
जो सुभट सात सौ भारी थे सब साथ तुम्हारे आये हैं।
कुष्टी कह कर मुनि निंदा की इस लिये सभी दुःख पाये हैं॥

॥ दोहा ॥

मुनि को डाला नीर में गिरे सिन्धु मंझार।
तुरत निकाला इसलिये हुये उदधि से पार॥

॥ चौवोला ॥

हुये उदधि से पार कर्म की अद्भुत है सब माया।
बड़ के बीज समान कर्म है शास्त्रों में बतलाया॥

जैसी करणी करी जिन्हों ने वैसा ही फल पाया।
सुखी बना वह जिस ने जग में सच्चा धर्म कमाया॥

॥ दौड़ ॥

सदा जो नव पद ध्याते अटल आनन्द मनाते।
कर्म ऐसे शुभ करना
आगे को "श्री पाल" तुम्हें कुछ पड़े नहीं दुःख भरना॥

॥ दोहा ॥

नील कण्ठ के राज्य में सेठ एक धनवान।
"चारुदत्त" शुभ नामथा दानीअति मतिमान॥

॥ राधेश्याम ॥

नृप नील कण्ठ से भी बढ़ कर सब उसका मान बढ़ाते थे।
जनता का राजा कह कह कर आदर से यश फैलाते थे॥
श्रेष्ठी की बढ़ती देख देख नृप मन ही मन दुःख पाते थे।
सम्मान घटे कैसे इसका बस यही भावना भाते थे॥

॥ दोहा ॥

इसी पाप वश भूप ने सोचे कई उपाय।
सब कुछ चाहा हड़पना द्वेष भाव में आय॥

॥ चौबोला ॥

द्वेष भाव में आये एक दिन सेठ पकड़ मंगवाया।
मिथ्या दोषारोपण कर के बन्दी शीघ्र बनाया॥

प्राण दण्ड देने का नृप ने छल षड्यंत्र रचाया।
भाग्य योग ने किन्तु सेठ को दुःख से आन बचाया॥

॥ दौड़ ॥

पूर्व कर्मों का लेखा सभी ने सम्मुख देखा।
सेठ वह धवल बना है
पिछला बदला लेने के हित ताना सभी ताना है॥

॥ दोहा ॥

तेरा मेरा वैर था पिछले भव के बीच।
तुझे मारने का तभी भाव उठा था नीच॥

॥ राधेश्याम ॥

अनि पुण्य उदय में तेरा था इस लिए नहीं कुछ कर पाया।
कुछ ज्ञान प्राप्त हो गया मुझे संयम ले जंगल में आया॥
हो गया मुझे अब अवधि ज्ञान जप तप ने रंग खिलाया है।
जो मुझे ज्ञान में दीख पड़ा सब आदि अंत बतलाया है॥

॥ दोहा ॥

मुनि वाणी सुन कर हुये विस्मित सब नर नार।
अहो! अहो!! इस कर्म का नाटक अपरम्पार॥
हाथ जोड़ "श्री पाल" जी बोले वचन विचार।
दुष्ट कर्म मैंने किये बार बार धिक्कार॥
श्रावक व्रत मुनिराज से सविधि किए स्वीकार।
जनता गद गद हो [illegible]

त्याग किया फिर सभी ने भक्ति भाव अनुसार।
शिक्षा दे मुनि इस तरह कर गये उग्र विहार॥

॥ राधेश्याम ॥

"श्री पाल" सहित सारी जनता वापिस नगरी में आई है।
घर घर में मंगल उतर पड़ा घर घर में बटी बधाई है॥
"श्री पाल" कुमर जी प्रेम सहित राजा का धर्म निभाते हैं।
ऐश्वर्य भोग के साथ साथ धार्मिकता भी अपनाते हैं॥

॥ दोहा ॥

रहते हैं आनन्द से "श्री पाल" कुमार।
न्याय नीति से प्रजा के बने हुये आधार॥

॥ राधेश्याम ॥

निष्पक्ष कुमर जी स्नेह सहित नगरी का पालन करते हैं।
जिसभांतिजिस तरहभी होता सब कष्ट प्रजा का हरते हैं॥
कुछ समय बाद ही "मैना" का शुभ पुण्य उदय में आया है।
भर गई गोद अभि ।से प्रिय सुत का दर्शन पाया है॥
चम्पा का कण कण मुदित हुआ घर घर में मंगल छाया है।
"त्रिलोक पाल" शुभ नाम अहा! सारी नगरी को भाया है॥

॥ दोहा ॥

पिता सदृश सुकुमार भी निकला सिंह समान।
मात पिता की भक्ति का हर दम रखता ध्यान॥

॥ राधेश्याम ॥

अगणित प्रचंडबल सैना के"श्री पाल"कुमर जी स्वामी हैं ।
नामी हैं सब जगती भर में सब भूपों में अभिगामी हैं ॥
धीरे धीरे "श्री पाल" कुमर जब वृद्ध दशा में आयेंगे ।
तप जप संयम शुभ करणी से अपना मन शुद्ध बनायेंगे ॥
निज पुत्रों को दे राज सभी त्यागी मुनिवर बन जायेंगे ।
कर्मों के बंधन तोड़ सभी फिर अन्त मोक्ष पद पायेंगे ॥
"मैना सुन्दर" आदिक सतियाँ सब अन्त मोक्ष में जायेंगी ।
सिद्धों की ज्योति में मिलकर सिद्धात्म सभी बन जायेंगी ॥
है धन्य सती"मैना"जिस ने दुःख में भी पतिका साथ दिया ।
हैं धन्य धन्य"श्री पाल"कुमर अपकारी परउपकार किया ॥
"श्री पाल"कुमर की परमकथाजो जन निजमन में धारेगा ।
संसार सिन्धु से निज नैया सचमुच वह पार उतारेगा ॥
सत् पुरुषों की गुण गाथा को जो प्रेम भाव से गाता है ।
निश्चयसे समझो इस जगती मेंवहपरमपुरुष बन जाता है ॥
नवपद की महिमा बतलाई श्रद्धा से जो भी गायेगा ।
सब कष्ट दूर हो जायेंगे निज जीवन सफल बनायेगा ।

॥ दोहा ॥

पुण्य योग से ही सदा मिलते सुख भरपूर ।
पुण्य कथा से पाप सब होंगे चकना चूर ॥

यदि अपने शुभ पुण्य का चखना चाहो स्वाद ।
दृढ़ निष्ठा के साथ में पढ़िये पुण्य प्रसाद ॥

* प्रशस्ति पद्य *

॥ दोहा ॥

महावीर भगवान के शासन के शृंगार ।
क्षमा दया के देवता साधु धर्म अवतार ॥

॥ राधेश्याम ॥

आचार्य श्री कर्पूर चन्द्र गुणवान् महा उपकारी हैं।
गम्भीर धीर हैं पूर्णतया अति कठिन महा व्रत धारी हैं।
उनके शासन के शिरोमणि गुरु देव श्री कहलाते हैं।
कस्तूर चन्द्र जी नाम महा भक्तों के मन को भाते हैं ॥
विजयादशमीकी शुभतिथि को मेरा यहकाव्य समाप्त हुआ ।
जैसा भी मुझ से वन पाया जो साधन था पर्याप्त हुआ ॥
कुछ लिखना मुझे न आना है पर कविता से है प्यार वड़ा ।
है इसी भावना का समझो मेरे मन को आधार वड़ा ॥
जो सज्जन मेरी कविता को पढ़ने का कष्ट उठायेंगे ।
गुण ग्राहक वन करके सच्चे नर जीवन सफल वनायेंगे ॥

॥ दोहा ॥

नेत्र विन्दु मुनि धर्म शुभ विक्रमार्क अभिराम ।
नगर भटिण्डा में हुआ पूर्ण काव्य का काम ॥

॥ राधेश्याम ॥

"गौतम मुनि" सच्ची श्रद्धा से श्री नमस्कार का जाप करो।
सद् गुरुकी शिक्षा अपना कर जीवन का सब संताप हरो ॥
मानव बनने का यत्न करो सिद्धान्त यही सुखकारी है।
मानवता का आराधक ही शिव पदवी का अधिकारी है ॥

॥ दोहा ॥

"गौतम" गुरु के नाम का हो सब को आधार।
जगती का दुःख दूर हो सुखी बने संसार ॥

॥ कल्याणं मङ्गलं शुभम् ॥

हमारे सुन्दर प्रकाशन:—

१. श्री मद् गौतम गीता हिन्दी—
२. श्री मद् गौतम गीता उर्दू—
३. पुण्य–परीक्षा (कथानक)
४. अभय दान–(कथानक)
५. गीत गगरी
६. हमारे गुरुदेव
७. महा मानव
८. गौतम गीताञ्जली भाग १—
९. गौतम गीताञ्जली भाग २—
१०. श्री गुरु चालीसा
११. पुण्य प्रसाद (आपके हाथ में ही हैं)
१२. अष्टादश श्लोकी गीता
१३. भगवान् महावीर स्वामी का तिरंगा चित्र

—: प्राप्ति स्थान :

श्री गौतम ज्ञान पीठ कैथल (करनाल)